वर्षः 3 अंकः17

न्यू इंडिया समाचार

1-15 मार्च, 2023 (निःशुल्क)

आत्मविश्वासी नारी तू नारायणी

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस विशेष

स्वर्णिम वर्ष की ओर अग्रसर नए भारत में महिलाओं को मिली सुरक्षा से स्वावलंबन की दिशा तो अब महिला नेतृत्व में विकास की यात्रा पर बढ़ रहा है राष्ट्र, क्योंकि नारी, नीति, निष्ठा, निर्णय शक्ति और नेतृत्व की होती हैं प्रतिबिंब...

एयरो इंडिया 2023

भारत के बढ़ते सामर्थ्य का प्रतीक

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 13 फरवरी को बेंगलुरु में वायु सेना स्टेशन पर एशिया के सबसे बड़े एयरो शो- एयरो इंडिया 2023 के 14वें संस्करण का उद्घाटन किया। पांच दिवसीय इस कार्यक्रम का विषय 'रन-वे टू अ बिलियन अपॉरट्यूनिटीज' था। इसमें भारत की 700 कंपनी सहित 80 से अधिक देशों की 800 से अधिक रक्षा कंपनियों ने भाग लिया। भारत का बीते 5 वर्षों में रक्षा निर्यात 6 गुना बढ़ा है जिसे 2024-25 तक डेढ़ बिलियन से बढ़ाकर 5 बिलियन डॉलर तक ले जाने का लक्ष्य है। प्रधानमंत्री के 'मेक इन इंडिया, मेक फॉर दी वर्ल्ड' की परिकल्पना के अनुरूप इस कार्यक्रम में स्वदेशी उपकरणों पर रहा जोर...

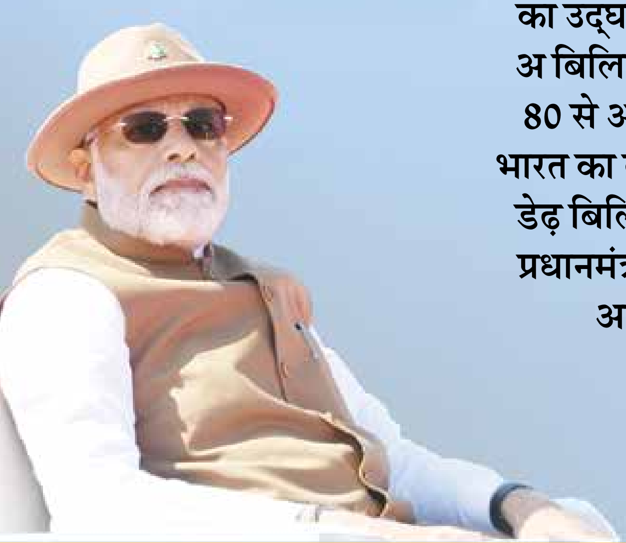

बेंगलुरु में वायु सेना स्टेशन पर एशिया के सबसे बड़े एयरो शो को देखने के लिए QR कोड Scan करें।

"अमृतकाल का भारत एक फाइटर पायलट की तरह आगे बढ़ रहा है, जिसको ऊंचाइयां छूने से डर नहीं लगता। जो सबसे ऊंची उड़ान भरने के लिए उत्साहित है। आज का भारत तेज सोचता है, दूर की सोचता है और तुरंत फैसले लेता है। जो देश दशकों से सबसे बड़ा डिफेंस इंपोर्टर था, वह अब दुनिया के 75 देशों को डिफेंस उपकरण एक्सपोर्ट कर रहा है।"

—नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

न्यू इंडिया
समाचार

वर्ष: 03, अंक: 17 | 1-15 मार्च, 2023

प्रधान संपादक
सत्येन्द्र प्रकाश,
प्रधान महानिदेशक
पत्र सूचना कार्यालय, नई दिल्ली

वरिष्ठ सलाहकार संपादक
संतोष कुमार

वरिष्ठ सहायक सलाहकार संपादक
पवन कुमार

सहायक सलाहकार संपादक
अखिलेश कुमार
चन्दन कुमार चौधरी

भाषा संपादन
सुमित कुमार (अंग्रेजी)
जय प्रकाश गुप्ता (अंग्रेजी)
नदीम अहमद (उर्दू)
पॉलमी रक्षित (बंगाली)

सीनियर डिजाइनर
रविन्द्र कुमार शर्मा
राजीव भार्गव
डिजाइनर
अभय गुप्ता
फिरोज अहमद

13 भाषाओं में उपलब्ध न्यू इंडिया समाचार को पढ़ने के लिए क्लिक करें।
https://newindiasamachar.pib.gov.in/news.aspx

न्यू इंडिया समाचार के पुराने अंक पढ़ने के लिए क्लिक करें
https://newindiasamachar.pib.gov.in/archive.aspx

'न्यू इंडिया समाचार' के बारे में लगातार अपडेट के लिए फॉलो करें:- @NISPIBIndia

अंदर के पन्नों पर
नारी के नेतृत्व में विकास की ओर बढ़ता भारत...

आवरण कथा
अमृत काल की ओर बढ़ते भारत में नारी शक्ति, नीति, निष्ठा, निर्णय शक्ति और नेतृत्व का प्रतिबिंब बनी है क्योंकि वेदों और भारतीय परंपरा ने भी यही आह्वान किया है कि नारी सक्षम हो, समर्थ हो और राष्ट्र को दिशा दे। | 12-21

नारी शक्ति से सुशोभित हो रहा 'पद्म'

जमीन से लेकर आसमां और नागरिक सम्मान तक महिलाओं की बढ़ रही भागीदारी | 22-25

जिनकी देशभक्ति ने जन-जन को किया प्रेरित

अमृत महोत्सव के दो साल, 15 अगस्त 2023 तक चलने वाले महोत्सव में हो चुके 2 लाख से ज्यादा कार्यक्रम | 41-44

समाचार सार। | 4-5

व्यक्तित्व - गंगूबाई हंगल
भारतीय शास्त्रीय संगीत की प्रसिद्ध गायिका जिन्होंने संघर्ष की ऐसी लकीर खींची जो आज तक अपनी मिसाल आप है | 6

विकसित भारत के संकल्प को दक्षिण के रास्ते मजबूती
कर्नाटक को एक महीने में पीएम मोदी ने दी तीन बार सौगातें | 7-9

विकसित भारत के विराट संकल्प की ओर एक बड़ा कदम
दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे का दिल्ली-दौसा-लालसोट खंड राष्ट्र को समर्पित | 10-11

असंगठित क्षेत्र के कामगारों का भविष्य सुरक्षित
आत्मनिर्भर भारत के सपनों को पूरा करने में श्रमिकों का सशक्तीकरण जरूरी, पीएम श्रमयोगी मान-धन योजना के चार साल पूरे | 26-27

"वंदे भारत ट्रेन आधुनिक भारत की भव्य तस्वीर"
देश में पहली बार एक साथ दो वंदे भारत ट्रेनों को हरी झंडी | 28-29

स्पीड और स्केल की राह पर आगे बढ़ता भारत
उत्तर प्रदेश वैश्विक निवेशक शिखर सम्मेलन 2023 | 30-31

खेल महाकुंभ से तराशे जा रहे भविष्य के ओलंपिक खिलाड़ी
देश भर में प्रतिभा निखारने के लिए सांसद कर रहे हैं खेल महाकुंभ का आयोजन | 32-33

भारतीय कलेवर में ढली आधुनिक शिक्षा व्यवस्था देश की प्राथमिकता
मुंबई में अल्जामिया-तुस-सैफियाह के नए परिसर का पीएम मोदी ने किया उद्घाटन | 34-35

जी-20: बैठकों से उत्पाद, संस्कृति, पर्यटन को मिल रही मजबूती
पखवाड़े में हुई जी-20 की बैठकों को जानिए | 36-37

केंद्रीय मंत्रिमंडल के फैसले
वाइब्रेंट होंगे सीमाई गांव, बनाई जाएगी 2 लाख सहकारिता समितियां | 38

असम के गोमोशा का आकर्षण बढ़ने से रोजगार में हो रही बढ़ोतरी
कृष्णगुरु एकनाम अखंड कीर्तन में प्रधानमंत्री मोदी का संबोधन | 39

महर्षि दयानंद सरस्वती की 200वीं जयंती समारोह का उद्घाटन | 40

प्रकाशक और मुद्रक- मनीष देसाई, महानिदेशक, केंद्रीय संचार ब्यूरो **मुद्रण:** इनफिनिटी एडवर्टाइजिंग सर्विसेस प्राइवेट लिमिटेड, एफबीडी वन कॉर्पोरेट पार्क, 10वीं मंजिल, नई दिल्ली-फरीदाबाद बॉर्डर, एनएच-1, फरीदाबाद-121003। **पत्राचार और ईमेल के लिए पता:** कमरा संख्या-278, केंद्रीय संचार ब्यूरो, सूचना भवन, द्वितीय तल, नई दिल्ली- 110003। **ईमेल-** response-nis@pib.gov.in आर. एन. आई. नंबर DELHIN/2020/78812

संपादक की कलम से...

आत्मनिर्भर भारत के केंद्र में नारी शक्ति

सादर नमस्कार।

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस की आप सभी को शुभकामनाएं।
भारत जब अमृत काल के पहले वर्ष में है, ऐसे में इस दिवस का महत्व और भी बढ़ जाता है। भारत की अध्यक्षता वाली जी-20 के एजेंडे में नारी शक्ति के नेतृत्व में विकास को विशेष रूप से शामिल किया गया है। दरअसल, महिलाओं को जब भी समान अवसर मिला है, उन्होंने सिद्ध किया है कि वह हर क्षेत्र में पुरुषों के बराबर ही नहीं, उनसे बेहतर प्रदर्शन भी कर सकती हैं। विज्ञान, खेल, कला, राजनीतिक नेतृत्व, रक्षा, चिकित्सा और इंजीनियरिंग आदि सभी क्षेत्रों में महिलाओं ने कई कीर्तिमान स्थापित किए हैं। ऐसे में अमृत काल की ओर बढ़ते आत्मनिर्भर भारत में महिला शक्ति की भूमिका बेहद महत्वपूर्ण हो जाती है क्योंकि महिला सशक्तीकरण के सामाजिक और आर्थिक दोनों पहलू हैं। आज भारत विश्व की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। भारत एक और बड़ी आर्थिक महाशक्ति के रूप में उभरे, उसके लिए यह अत्यंत महत्वपूर्ण है कि कार्यबल में और अधिक महिलाएं भागीदारी करें।

वर्ष 2014 से महिलाओं के सशक्तीकरण के लिए विभिन्न योजनाओं की शुरुआत कर हर चरण में उनके लिए विशेष नीतियां और योजनाएं बनाई गई हैं ताकि नारी शक्ति को जीवन में सुगमता के साथ मिले उड़ान भरने का अवसर। अमृत काल के पहले अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर नारी शक्ति के नेतृत्व में भारत और विश्व की प्रगति हमारी इस बार की आवरण कथा बनी है।

व्यक्तित्व की कड़ी में 'ख्याल' शैली की मशहूर भारतीय गायिका गंगूबाई हंगल, अमृत महोत्सव की श्रृंखला में महानायकों की प्रेरक गाथा को शामिल किया गया है। इसके अलावा वंदे भारत का बढ़ता सफर, कर्नाटक को विकास की सौगात, मुंबई-दिल्ली एक्सप्रेसवे के पहले चरण की शुरुआत, पीएम श्रम योगी मान-धन योजना, भारत की अध्यक्षता वाली जी-20 से जुड़ी बैठकें और पखवाड़े भर के प्रधानमंत्री के कार्यक्रमों को पत्रिका में विशेष रूप से शामिल किया गया है।

पुनश्चः इसमें कोई संदेह नहीं कि महिलाओं के सशक्तीकरण से परिवार सशक्त होंगे और सशक्त परिवार के आधार पर ही एक सशक्त समाज और सशक्त राष्ट्र बनेगा। इसी दृष्टिकोण के साथ भारत अमृत यात्रा की ओर बढ़ रहा है और नारी शक्ति उस यात्रा की सारथी बन रही हैं।

आप अपना सुझाव हमें भेजते रहें।

हिंदी, अंग्रेजी व अन्य 11 भाषाओं में उपलब्ध पत्रिका पढ़ें/डाउनलोड करें।
https://newindiasamachar.pib.gov.in/news.aspx

आपकी बात...

देश में लोकतंत्र की जड़ मजबूत

न्यू इंडिया समाचार पत्रिका की आवरण कथा पढ़कर 2023 में मोटा अनाज वर्ष मनाए जाने और देश में पैदा होने वाले मोटे अनाजों के बारे में जानकारी मिली। इसके अतिरिक्त गणतंत्र दिवस के अवसर पर निकाली गई झांकी के चित्र एवं उससे जुड़ी हुई तमाम जानकारियां देने के लिए आपका आभार। हमारे देश में लोकतंत्र की जड़ बहुत मजबूत है। पत्रिका से विज्ञान, किसान, अध्यात्म, स्वतंत्रता संग्राम एवं देश के लिए कुछ कर गुजरने वाले खिलाड़ियों के बारे में जानकारी प्राप्त होती है। आशा करता हूं यह पत्रिका हमारे देश को आगे ले जाने एवं जानकारी देने में हमेशा अग्रणी रहेगी। प्रतियोगिता की तैयारी करने वाले छात्रों के लिए भी यह पत्रिका मददगार है।

श्रीगोपाल श्रीवास्तव

shrigopal6@gmail.com

न्यू इंडिया समाचार पत्रिका में सराहनीय होते हैं सारगर्भित लेख

मैं न्यू इंडिया समाचार पत्रिका पढ़ने का अवसर नहीं छोड़ता हूं। सारगर्भित लेख और जिस प्रकार से पत्रिका का आवरण पृष्ठ तैयार किया जाता है वह सराहनीय है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी वसुधैव कुटुंबकम् की भावना को लेकर चल रहे हैं। विश्व पटल पर भारत का जिक्र अब हर तरीके से होने लगा है। बनारस हो, दिल्ली या कोई अन्य राज्य, मन की बात एवं परीक्षा पर चर्चा कार्यक्रम बहुत लोकप्रिय है।

snehasurabhi5@gmail.com

समृद्ध विरासत और संस्कृति के बारे में लगातार मिलती हैं खबरें

न्यू इंडिया समाचार पत्रिका नियमित पढ़ता हूं। इस पत्रिका के माध्यम से भारत और इसकी समृद्ध विरासत एवं संस्कृति के बारे में खबरें लगातार मिलती रहती हैं। इसमें कई जानकारियां रहती हैं। कवर स्टोरी सहित अन्य आलेख रोचक होते हैं। व्यक्तित्व और 'आजादी का अमृत महोत्सव' श्रृंखला में देशभक्त नायकों के बारे में पढ़ना अच्छा लगता है।

ashishprabhatmishra@gmail.com

भारत के जी-20 की अध्यक्षता के बारे में मिली जानकारी

न्यू इंडिया समाचार पत्रिका का 16-31 जनवरी का अंक पढ़ने को मिला। इस अंक में हमें भारत के जी-20 की अध्यक्षता के बारे में पूरी जानकारी मिली। वसुधैव कुटुंबकम् का विषय निश्चित रूप से पूरी दुनिया को हमारी ओर आकर्षित करेगा। निश्चित रूप से हम निकट भविष्य में महाशक्ति बन सकते हैं।

डॉ जिजीकुमारी टी

jijikumari@gmail.com

प्रतियोगिता परीक्षा में मददगार है न्यू इंडिया समाचार

मुझे न्यू इंडिया समाचार पाक्षिक पत्रिका पढ़ना अच्छा लगता है। मैं प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी कर रहा हूं, जिसमें यह पाक्षिक पत्रिका बहुत मददगार है। जिस तरह से इस पत्रिका को डिजाइन किया जाता है वह देखने में आकर्षक होता है। यह समझने में भी बहुत आसान है।

प्रशांत कचरू जाधव

1999prashantjadhav@gmail.com

हमें फॉलो करें @NISPIBIndia

पत्राचार और ईमेल के लिए पता: कमरा संख्या-278, केंद्रीय संचार ब्यूरो, सूचना भवन, द्वितीय तल, नई दिल्ली- 110003। ईमेल- response-nis@pib.gov.in

'लक्ष्य केंद्रित विकास' की मिसाल 9 महीने में 30 हजार अमृत सरोवर

पृथ्वी और प्रकृति की अनमोल देन जल को संरक्षित करने को संकल्पित राष्ट्र वर्षा जल संचयन के लिए कैच द रेन योजना पर काम कर रहा है। उसी कड़ी में शुरू 'अमृत सरोवर' योजना में देश ने 9 महीने में 30 हजार से अधिक सरोवर बनाकर 'लक्ष्य केंद्रित विकास' की मिसाल पेश की है।

आजादी के अमृत महोत्सव के तहत प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 24 अप्रैल, 2022 को अमृत सरोवर योजना की औपचारिक घोषणा की थी। ग्रामीण क्षेत्रों में जल संकट दूर करने और जल संरक्षण को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से शुरू किए गए 'मिशन अमृत सरोवर' के तहत 15 अगस्त, 2023 तक 50 हजार अमृत सरोवर के निर्माण का लक्ष्य रखा है जिसमें 60% कार्य पूरा हो गया है। अब इस लक्ष्य में 50 हजार अतिरिक्त सरोवर जोड़ दिए गए हैं। सरोवर के चारों ओर नीम, पीपल और बरगद के पेड़ लगाए जाएंगे।

सफलता की राह पर अग्रसर मिशन अमृत सरोवर के तहत प्रत्येक जिले में 75 अमृत सरोवर बनाए जाने हैं। 5 जनवरी तक देशभर में इसके लिए 93,112 जगह की पहचान कर ली गई है। 50 हजार से ज्यादा सरोवर का निर्माण कार्य अभी चल रहा है। भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण ने भी देशभर में 548 अमृत सरोवर बनाने का जिम्मा लिया है। अमृत सरोवर ग्रामीण आजीविका और उत्पादकता में सुधार के अलावा विशेष रूप से पानी की कमी वाले क्षेत्रों में पानी की उपलब्धता में वृद्धि करते हैं। इससे सिंचाई नेटवर्क और सूक्ष्म सिंचाई में सुधार होगा।

भारतीय रेल की नई सेवा, अब व्हाट्सएप से ट्रेन में मंगवाएं खाना

अपनी ई-कैटरिंग सेवाओं को और ज्यादा ग्राहक केंद्रित बनाने की दिशा में रेलवे ने एक और कदम आगे बढ़ाया है। भारतीय रेल की पीएसयू, इंडियन रेलवे कैटरिंग एंड टूरिज्म कॉरपोरेशन (आईआरसीटीसी) लिमिटेड ने विशेष रूप से एक विकसित वेबसाइट www.catering.irctc.co.in के साथ-साथ अपने ई-कैटरिंग एप 'फूड ऑन ट्रैक' के माध्यम से सेवाएं आरंभ की हैं। रेलवे के इस कदम से अब यात्री ट्रेन में सफर के दौरान व्हाट्सएप की मदद से खाना ऑडर कर सकते हैं। भारतीय रेल ने हाल ही में ई-कैटरिंग सेवाओं के माध्यम से भोजन ऑर्डर करने के लिए एक व्हाट्सएप नंबर जारी किया है। यह व्हाट्सएप नंबर +91-8750001323 है। फिलहाल यह सेवा चुनिंदा रेलगाड़ियों के लिए शुरू की गई है। ग्राहकों के फीडबैक और सुझावों के आधार पर भारतीय रेल इसे अन्य रेलगाड़ियों

में भी लागू करेगी। वर्तमान में, आईआरसीटीसी की ई-कैटरिंग सेवाओं से ग्राहकों को एक दिन में लगभग 50,000 प्लेट भोजन परोसे जा रहे हैं।

आत्मनिर्भर बनता चीनी उद्योग, रिकॉर्ड गन्ने का उत्पादन

देश में चीनी उद्योग को आत्मनिर्भर बनाने के लिए केंद्र सरकार की नीतियों का असर न सिर्फ रिकॉर्ड गन्ना उत्पादन पर हो रहा है बल्कि गन्ना खरीद, चीनी निर्यात और इथेनॉल उत्पादन में भी तेजी से बढ़ोतरी हो रही है। अब चीनी उद्योग सरकार से सब्सिडी के बिना ही आत्मनिर्भर रूप से गन्ना किसानों का भुगतान 2020-21 में 99.98% और 2021-22 चीनी मौसम में 98% से ज्यादा कर चुका है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर चीनी की कीमतें ऊंचाई पर हैं लेकिन देश में चीनी की औसत खुदरा मूल्य की स्थिरता के कारण 'मिठास' बनी हुई है। देश में वर्ष-2021-22 के दौरान 5 हजार लाख मीट्रिक टन से अधिक गन्ने और 394 लाख मीट्रिक टन से अधिक चीनी का उत्पादन हुआ। 36 लाख मीट्रिक टन चीनी से इथेनॉल का उत्पादन किया गया। इस वर्ष इथेनॉल की बिक्री से चीनी मिलों को 20 हजार करोड़ रुपये और तीन वर्षों में 48,573 करोड़ रुपये प्राप्त हुए हैं। चीनी मौसम 2022-23 में 45-50 लाख मीट्रिक टन बची हुई चीनी से इथेनॉल उत्पादन का जो लक्ष्य है उसे बढ़ाकर 2025 तक 60 लाख मीट्रिक टन किया गया है। इससे मिलों की नगदी में सुधार होगा और गन्ना किसानों की बकाया राशि का समय से भुगतान होगा।

बची हुई चीनी से इथेनॉल उत्पाद

चीनी मौसम वर्ष	चीनी से इथेनॉल उत्पादन
2018-19	3.37 लाख टन
2019-20	9.26 लाख टन
2020-21	22 लाख टन
2021-22	36 लाख टन

यूं बढ़ रहा है चीनी का निर्यात

चीनी मौसम वर्ष	निर्यात
2019-20	59.60 लाख टन
2020-21	70 लाख टन
2021-22	109 लाख टन

पीएम स्वनिधि योजना में केंद्र ने दी 58 करोड़ रु. की ब्याज सब्सिडी

कोविड-19 के बाद स्ट्रीट वेंडर आसानी से अपना व्यवसाय फिर से शुरू कर सकें इसलिए 1 जून 2020 को प्रधानमंत्री पथ विक्रेता आत्मनिर्भर निधि (पीएम स्वनिधि) केंद्र सरकार ने शुरू की थी। जनवरी, 2023 तक सरकार ने इसके लाभार्थियों को ब्याज सब्सिडी में 58.83 करोड़ रुपये और कैशबैक में 25.70 करोड़ रुपये का भुगतान किया है।

लोकसभा में दिए सवालों के जबाव के अनुसार इस योजना में 31 जनवरी, 2023 तक 33.45 लाख स्ट्रीट वेंडर को करीब 4,828 करोड़ रुपये की राशि वितरित की गई है। योजना का विस्तार अब दिसंबर, 2024 तक बढ़ा दिया गया है। इसी योजना के तहत 'स्वनिधि से समृद्धि' नाम से एक अंब्रेला पहल जनवरी, 2021 में शुरू की गई जिसका उद्देश्य सरकार की वर्तमान में चालू 8 योजनाओं को जोड़कर लाभार्थी परिवारों के जीवन स्तर में सुधार की एक छतरी तैयार करनी है।

"अतुल्य भारत! विजिट इंडिया वर्ष 2023" लॉन्च, लोगो का अनावरण

भारत की जी-20 अध्यक्षता के दौरान विदेशी पर्यटकों को प्रोत्साहित करने के लिए केंद्रीय पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जी. किशन रेड्डी ने 31 जनवरी को "अतुल्य भारत! विजिट इंडिया वर्ष 2023" लॉन्च किया और लोगो का भी अनावरण किया। जी-20 दौरान देश में एक लाख से अधिक विदेशी प्रतिनिधि आएंगे। पर्यटन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से प्रतिनिधियों को भारत इन्हें स्मारक, त्योहार और भारतीय संस्कृति के सभी पहलू दिखा रहा है। भारत सरकार के प्रयासों का ही नतीजा है कि वैश्विक महामारी के बीच पर्यटन की घटी हुई रौनक लौटने लगी है। वर्ष 2021 में 15.2 लाख विदेशी पर्यटक आए थे जो 2022 में बढ़कर 61.9 लाख हो गए यानी 305.4% की वृद्धि देखने को मिली है। देश में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने 24X7 बहुभाषी पर्यटन हेल्पलाइन शुरू करने के अलावा 165 देशों के नागरिकों के लिए 5 उपश्रेणियों में ई-वीजा की सुविधा दी है। ●

जन्म: 5 मार्च, 1913
निधन: 21 जुलाई, 2009

भारतीय शास्त्रीय संगीत की प्रसिद्ध गायिका

संघर्ष की ऐसी लकीर खींची जो आज तक अपनी मिसाल आप है...

'ख्याल' गायकी की पहचान और किराना घराना की बेजोड़ शख्सियत गंगूबाई, चाहे राग भैरव हो या भीमपलासी, राग भोपाली हो या चंद्रकौंस, लंबी और खींची हुई गंभीर ताल, भारतीय संगीत की ऐसी ऊंचाई, जहां इस 'गानेवाली' ने संघर्ष की ऐसी लकीर खींची जो आज तक अपनी मिसाल आप है। गंगूबाई हंगल को बचपन में ही जातिगत और लिंगभेद का सामना करना पड़ा क्योंकि गंगूबाई देवदासी परंपरा वाले केवट परिवार से ताल्लुक रखती थी, जहां कुछ अलग करना पहाड़ से टकराने जैसा था। लेकिन गंगूबाई ने कभी हार नहीं मानी और 'अपने जीवन के संगीत' पर अटल रहकर हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के दिग्गजों में अपनी जगह बनाई...

हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में 'ख्याल' शैली की मशहूर भारतीय गायिका गंगूबाई हंगल का जन्म 5 मार्च, 1913 को कर्नाटक के धारवाड़ जिले के शुक्रवारादापेते में हुआ था। गंगूबाई में संगीत के प्रति ऐसा लगाव था कि बचपन के दिनों में वह ग्रामोफोन सुनने के लिए सड़क पर दौड़ पड़ती थीं और उस आवाज की नकल करने की कोशिश करती थीं। बेटी में संगीत की प्रतिभा को देखकर गंगूबाई की संगीतज्ञ मां अंबाबाई ने कर्नाटक संगीत के प्रति अपने लगाव को दूर रख दिया। संगीत में पहचान रखने वाली अंबाबाई ने यह सुनिश्चित किया कि उनकी बेटी, एच. कृष्णाचार्य, दत्तोपंत और किराना उस्ताद सवाई गंधर्व से सर्वश्रेष्ठ हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत सीखे। संगीत में कुछ कर गुजरने की जिद्द और संकल्प का अंदाजा इससे लगाया जा सकता है कि गंगूबाई हंगल गुरु के घर पहुंचने के लिए पहले 30 किलोमीटर ट्रेन से यात्रा करती थी और फिर पैदल भी चलती थी।

मां अंबाबाई ने गंगू को गुरु सवाई गंदर्भ के पास भेजा तो गायकी का यह सफर मुंबई के छोटे-मोटे समारोह से शुरु होकर कर्नाटक संगीत नृत्य अकादमी पुरस्कार (1962), पद्मभूषण(1971), संगीत नाटक अकादमी (1973), तानसेन सम्मान (1984), पद्म विभूषण(2002) सहित कई सम्मान और पुरस्कार तक पहुंचा। वजनदार और ठहरी हुई आवाज, जिसका एक-एक स्वर और कान पर हाथ रखकर खींची गई तान आसमान को भेदती हुई संगीत की समझ रखने वालों के मन को जोड़ देती थी। आजादी पूर्व 1945 तक उन्होंने ख्याल, भजन, ठुमरी पर आधारित प्रस्तुति देश के अलग-अलग शहरों में दी। इसके बाद उप-शास्त्रीय शैली में गाना बंद कर दिया और शास्त्रीय शैली में राग गाना जारी रखा। ऑल इंडिया रेडियो पर नियमित उनकी गायकी सुनने को मिलती थी। भारत के उत्सवों में बुलाई जातीं थीं। हंगल गांव की रहने वाली गंगूबाई ने आर्थिक संकट, पड़ोसियों की तरफ से जातीय आधार पर खिल्ली उड़ाने और पेट की आग की बाधाओं को संघर्ष से पार करते हुए भारतीय शास्त्रीय संगीत की नब्ज पकड़ कर किराना घराना की विरासत को समृद्ध किया और राष्ट्र को उच्च स्तर का संगीत दिया।

गंगूबाई हंगल का वर्ष 1929 में सोलह साल की उम्र में गुरुराव कौलगी से विवाह हुआ था। इनके दो बेटे और एक बेटी थी। महज 4 वर्ष बाद ही पति की मृत्यु हो गई। गंगूबाई हंगल को बच्चों के पालन-पोषण के लिए अपने गहने और घरेलू सामान तक बेचकर पैसे जुटाने पड़े। गंगूबाई के धीरे-धीरे खुलते राग, जैसे सुबह की हर किरण पर कमल की एक-एक पंखुड़ी खुलती जा रही हो। उनका यह गगनभेदी स्वर 96 वर्ष की उम्र में 21 जुलाई, 2009 को उनके निधन के साथ हमसे जुदा हो गया। गंगूबाई हंगल की आत्मकथा नन्ना बदुकिना हादु' (मेरे जीवन का संगीत) नाम से प्रकाशित हुई। ●

आत्मनिर्भर और विकसित भारत के संकल्प को दक्षिण के रास्ते मजबूती

आजादी के 75 वर्ष पूरे हो चुके हैं। अब देश अगले 25 वर्ष के नए संकल्पों को सिद्ध करने के लिए आगे बढ़ रहा है। अमृतकाल में आत्मनिर्भर और विकसित भारत के संकल्प को पूरा करने के लिए दक्षिण के राज्यों को केंद्र सरकार रक्षा कॉरिडोर, इंडस्ट्रीयल कॉरिडोर, मल्टी मॉडल कनेक्टिविटी और आधुनिक तकनीक के साथ मजबूती दे रही है। नवंबर से फरवरी के बीच प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कर्नाटक के लोगों से पांच बार न सिर्फ कनेक्ट हुए बल्कि 6 फरवरी को तुमकुरु में एशिया की सबसे बड़ी हेलीकॉप्टर फैक्ट्री राष्ट्र को समर्पित की। उन्होंने तुमकुरु औद्योगिक टाउनशिप का शिलान्यास करने के साथ हजारों करोड़ रुपये के विकास कार्यों की दी सौगातें...

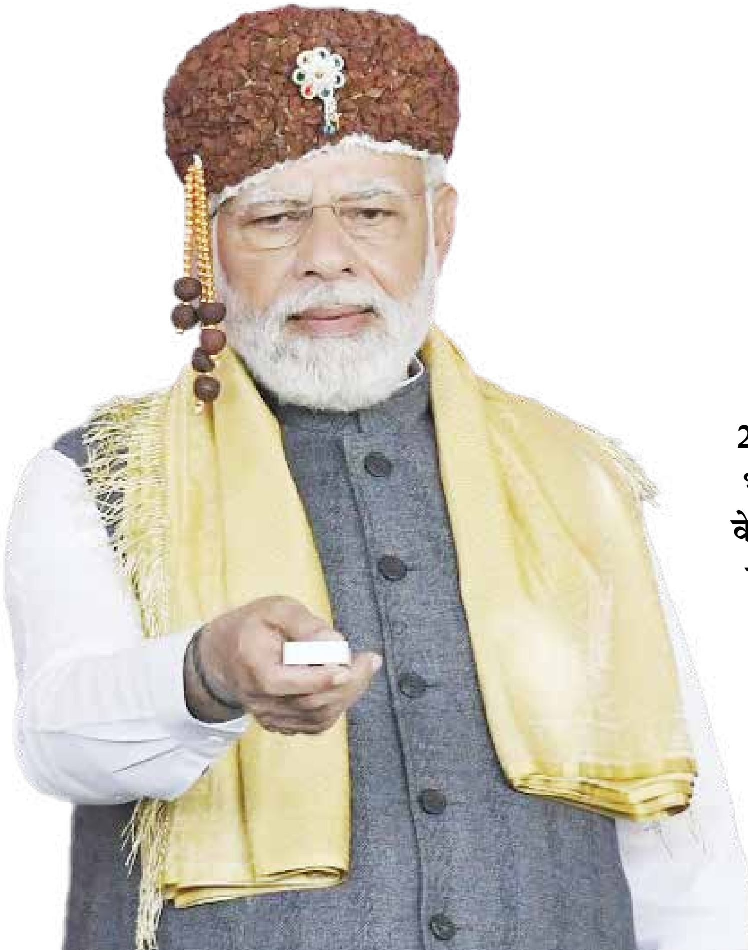

जैव ईंधन और अक्षय ऊर्जा उत्पादन में अग्रणी राज्य कर्नाटक में औद्योगिक विकास और रक्षा उपकरण उत्पादन में तेजी से भागीदार बनाने के लिए इंफ्रास्ट्रक्चर को मजबूती दी जा रही है। काशी-तमिल संगमम् में प्रधानमंत्री मोदी का दक्षिण भारतीय परंपरागत पहनावे को दक्षिण भारत की विरासत और संस्कृति की कड़ी को मजबूत करने के तौर पर देखा जा रहा है। परंपरा और तकनीक से सुदृढ़ कर्नाटक में मैन्युफैक्चरिंग और उत्पादन को बढ़ाने के लिए केंद्र सरकार यहां लगातार इंफ्रास्ट्रक्चर और निवेश को बढ़ावा दे रही है। यही वजह है कि आज पूरी दुनिया भारत की तरफ उम्मीद भरी नजरों से देखती है और भारत जो कहता है, दुनिया उसे आने वाले कल की आवाज मानती है।

आत्मनिर्भर और विकसित भारत में कर्नाटक की भागीदारी मजबूत करने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, 12 जनवरी को हुबली, 19 जनवरी को कलबुरगी और फिर 6 फरवरी को तुमकुरु पहुंचे। इससे पहले 2 नवंबर और 12 नवंबर 2022 को भी कर्नाटक के लोगों से कनेक्ट हुए थे। इस दौरान प्रधानमंत्री मोदी ने हजारों करोड़ रुपये की परियोजनाओं का शुभारंभ और शिलान्यास किया।

रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता को मजबूती देगी हेलीकॉप्टर फैक्ट्री

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आत्मनिर्भर भारत और आत्मनिर्भर रक्षा क्षेत्र को मजबूती देने वाले हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड (एचएएल)

> **21वीं सदी का भविष्य तय करने में एनर्जी सेक्टर की बड़ी भूमिका है। भारत के लोगों की आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए भी एनर्जी बड़ा फैक्टर है। उद्योग से कार्यालय और फैक्ट्री से घर तक ऊर्जा की मांग बढ़ रही है। इंटरनेशनल एनर्जी एसोसिएशन ने कहा है कि इस दशक में भारत की ऊर्जा मांग दुनिया में सबसे ज्यादा होगी। इस क्षेत्र के निवेशक और स्टेकहोल्डर्स के लिए भारत नई संभावनाएं लेकर आया है।**
>
> **– नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री**

एशिया की सबसे बड़ी हेलीकॉप्टर फैक्ट्री

हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड (एचएएल) की एशिया की यह सबसे बड़ी हेलीकॉप्टर फैक्ट्री करीब 625 एकड़ में फैली है। भविष्य में 3 से 15 टन की श्रेणी वाले 1,000 से अधिक हेलीकॉप्टर निर्माण की सुविधा होगी। यह फैक्ट्री भारतीय सेना और एयरोस्पेस इंडस्ट्री को नई ऊंचाई देगी। एचएएल के 300 ध्रुव हेलीकॉप्टर अभी सेवा में हैं। यहां लाइट कॉम्बेट हेलीकॉप्टर, इंडियन मल्टीरोल हेलीकॉप्टर का निर्माण और मरम्मत की सुविधा उपलब्ध होगी। फिलहाल फैक्ट्री में हर साल 30 हेलीकॉप्टरों का निर्माण होगा। हालांकि यहां अभी लाइट यूटिलिटी हेलीकॉप्टर (एलयूएच) का उत्पादन होगा। फैक्ट्री स्वदेशी हेलीकॉप्टर की जरूरतों को पूरा करेगा। यह भारत को हेलीकॉप्टर डिजाइन, विकास और निर्माण में आत्मनिर्भर बनाएगी।

मल्टी मॉडल कनेक्टिविटी से जुड़ेगी तुमकुरु औद्योगिक टाउनशिप

देशभर में नेशनल इंडस्ट्रीयल डेवलपमेंट प्रोग्राम के तहत नई इंडस्ट्रीयल सिटी को स्मार्ट सिटी के तौर पर विकसित किया जा रहा है। नई पीढ़ी के तकनीक से लैस तुमकुरु इंडस्ट्रीयल टाउनशिप भी इसी तर्ज पर कर्नाटक में चेन्नई-बेंगलुरु इंडस्ट्रीयल कॉरिडोर पर विकसित किया जा रहा है। 8,484 एकड़ का यह प्रोजेक्ट चरणबद्ध तरीके से पूरा किया जाएगा। पहले चरण में 1,722 एकड़ में मिक्स्ड यूज डेवलपमेंट के लिए विकसित किया जाएगा। इसमें रेजिडेंशियल, कॉमर्शियल और इंडस्ट्रीयल यूज शामिल है। खाद्य पदार्थ, वस्त्र, ऑटो, ऑटो पाट्‌र्स, फार्मास्यूटिकल, केमिकल और इंजीनियरिंग इंडस्ट्री के लिए इसमें सुविधाएं शामिल होंगी। इस टाउनशिप को पीएम गतिशक्ति के तहत मल्टी मॉडल कनेक्टिविटी दी जाएगी। मेक इन इंडिया, मेक फॉर द वर्ल्ड के संकल्प को साकार करने में इस तरह की टाउनशिप मददगार होगी।

की हेलीकॉप्टर फैक्ट्री का उद्‌घाटन और नए लाइट यूटिलिटी हेलीकॉप्टर का अनावरण किया। इस फैक्ट्री का शिलान्यास 2016 में पीएम मोदी ने किया था। तुमकुरु औद्योगिक टाउनशिप, तुमकुरु में तिप्टूर और चिक्कानायकनहल्ली में दो जल जीवन मिशन का शिलान्यास भी किया। जल जीवन परियोजनाओं से 147 बस्तियों के लिए जलापूर्ति की व्यवस्था होगी। इन परियोजनाओं से कर्नाटक के युवाओं को रोजगार, ग्रामीणों और महिलाओं को सुविधा, सेना और मेड इन इंडिया को मजबूती तो कर्नाटक को नई ऊंचाई मिलेगी। वहीं बेंगलुरु में भारत की जी-20 अध्यक्षता कैलेंडर के पहले बड़े ऊर्जा कार्यक्रम, ऊर्जा सप्ताह 2023 में इथेनॉल मिश्रण वाले ई20 ईंधन, दो बर्नर वाले इंडोर सोलर कुकिंग सिस्टम का लोकार्पण भी किया।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में राष्ट्र डिफेंस मैन्युफैक्चरिंग के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बन रहा है। देश में थल, जल, वायु और साइबर स्पेस के लिए स्वदेशी सैन्य हथियारों को डिजाइन करने के साथ बनाया भी जा रहा है। भारत ने 2025 तक 40 हजार करोड़ रुपये के रक्षा उत्पादों के निर्यात का लक्ष्य रखा है, जिसमें यह फैक्ट्री मददगार बनेगी। प्रधानमंत्री मोदी कहते हैं कि जब नेशन फर्स्ट, राष्ट्र प्रथम की भावना से काम होता है, तो सफलता जरूर मिलती है। भारत ही नहीं एशिया की सबसे बड़ी हेलीकॉप्टर मैन्युफैक्चरिंग फैक्ट्री तुमकुरु में शुरू होने से यहां न सिर्फ 4 लाख करोड़ रुपये का बिजनेस आएगा बल्कि 6 हजार नई नौकरियों का सृजन भी होगा।

ड्रोन मैन्युफैक्चरिंग से लेकर तेजस फाइटर प्लेन बनाने तक की कर्नाटक की ताकत दुनिया देख रही है। कर्नाटक निवेशकों के लिए पहली पसंद बना है। रक्षा जरूरतों पर विदेशी निर्भरता कम करने का संकल्प लेकर तुमकुरु हेलीकॉप्टर फैक्ट्री में उत्पादन शुरू हो गया है। देशी कंपनियों से रक्षा उपकरणों की खरीद के लिए 4 सूची जारी की है जिसमें उन्नत असॉल्ट राइफल से लेकर टैंक, विमान वाहक, हेलीकॉप्टर, लड़ाकू जेट और परिवहन विमान तक का निर्माण भारत कर रहा है। रक्षा उत्पादों से न सिर्फ देश की जरूरतों की पूर्ति हो रही है बल्कि अब निर्यात भी कई गुणा बढ़ा है।

तुमकुरु इंडस्ट्रीयल टाउनशिप से विकास को मजबूती

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने चेन्नई-बेंगलुरु इंडस्ट्रीयल कॉरिडोर के तहत तुमकुरु इंडस्ट्रीयल टाउनशिप का शिलान्यास किया। यह प्रोजेक्ट

हरित ऊर्जा को बजट में बूस्ट, भारत में अभूतपूर्व संभावनाएं

हरित ऊर्जा को लेकर पिछले 9 वर्षों में भारत के संकल्प और प्रयास को पूरी दुनिया देख रही है। इस दौरान न सिर्फ रिन्यूअल एनर्जी की क्षमता 70 गीगावॉट से बढ़कर 170 गीगावॉट तक पहुंची है बल्कि सौर ऊर्जा की क्षमता 20 गुना तक बढ़ी है। वित्त वर्ष 2023-24 के बजट में एनर्जी ट्रांजिशन और 2070 तक नेट-जीरो उद्देश्यों को आगे बढ़ाने की प्राथमिकता में 35 हजार करोड़ रुपये के पूंजी निवेश का प्रावधान किया है जिससे भारत में ऊर्जा क्षेत्र को लेकर अभूतपूर्व संभावनाएं बढ़ रही हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 6 फरवरी को बेंगलुरु में ऊर्जा सप्ताह 2023 के तहत ई20 ईंधन, इंडियन ऑयल की 'अनबॉटल्ड' पहल के तहत यूनिफॉर्म और इंडोर सोलर कुकिंग सिस्टम के ट्विन-कुकटॉप का व्यवसायिक मॉडल लॉन्च किया। ग्रीन मोबिलिटी रैली को हरी झंडी भी दिखाई। ई20 ईंधन शुरुआत में 11 राज्यों में तेल विपणन कंपनियों के 84 खुदरा दुकानों पर शुरू किया गया है। प्लास्टिक बोतल को रिसाइकिल कर कपास के साथ मिलाकर कपड़ा बनाने वाले प्लांट का शुभारंभ किया। इसमें 70% कार्बन का उत्सर्जन कम होता है। बायो-एनर्जी विस्तार को लेकर प्रधानमंत्री मोदी ने पिछले साल अगस्त में पहली 2जी इथेनॉल बायो-रिफाइनरी की बात की थी और कहा था कि 12 कमर्शियल 2जी इथेनॉल प्लांट की तैयारी है।

ई20 ईंधन से राष्ट्र के बचेंगे सालाना ₹54 हजार करोड़, किसानों की बढ़ेगी आय

प्रधानमंत्री जीवन योजना के तहत नई जनरेशन की एडवांस बायो-फ्यूल प्रोजेक्ट में करीब 25 हजार करोड़ रुपये की सहायता सरकार दे रही है। कच्चे तेल के आयात में कमी के लिए इथेनॉल की 2025 तक 20% मिश्रण का लक्ष्य रखा है। इस लक्ष्य को हासिल करने के बाद सालाना करीब 54 हजार करोड़ रुपये की बचत होगी। इससे किसानों की सालाना करीब 49 हजार करोड़ रुपये आय बढ़ेगी। तेल कंपनियां 2जी, 3जी इथेनॉल प्लांट लगाने पर सालाना 8 हजार करोड़ रुपये खर्च करेंगी।

पंचामृत का मंत्र

- 2070 तक नेट जीरो कार्बन उत्सर्जन का लक्ष्य।
- 2030 तक नॉन फॉसिल एनर्जी क्षमता 500 गीगा वॉट करेंगे।
- 2030 तक ऊर्जा जरूरतों की 50% पूर्ति रिन्युअल एनर्जी से करेंगे।
- 2030 तक अनुमानित 1 बिलियन टन कार्बन की कमी करेंगे।
- 2030 तक अर्थव्यवस्था की कार्बन तीव्रता को 45% से अधिक कम करेंगे।

पीएम मोदी ने पहनी रिसाइकिल प्लास्टिक बोतल वाली जैकेट

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 8 फरवरी को संसद में बेकार प्लास्टिक बोतलों की रिसाइकिल सामग्री से बनी स्लीवलेस 'सदरी' जैकेट पहनकर पहुंचे। संसद में इस जैकेट के पहनकर पहुंचने पर एक सांसद ने ट्वीट किया, इस तरह की जैकेट पहनकर पीएम मोदी ने दिखा दिया है कि पर्यावरण के अनुकूल जीवनशैली न केवल टिकाऊ है, बल्कि फैशन के अनुकूल भी है। यह हल्के नीले रंग की जैकेट इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन की 'अनबॉटल्ड' पहल लांच कार्यक्रम में पीएम मोदी को 6 फरवरी को बेंगलुरु में भेंट की गई थी।

नेशनल इंडस्ट्रीयल डेवलपमेंट प्रोग्राम में शामिल है। तीन चरणों में बनने वाला यह टाउनशिप 8,484 एकड़ में फैला है। पीएम मोदी कहते हैं, "बीते सालों में चार इंडस्ट्रीयल कॉरिडोर शुरू हो चुके हैं और अब ऐसे कॉरिडोर की संख्या को एक दर्जन तक बढ़ाया जा रहा है। अब देश की इंडस्ट्री को ऐसी सुविधाएं देने का प्रयास है जो प्लग एंड प्ले इंफ्रास्ट्रक्चर से लैस हो। यानी निवेशकों को अपना सिस्टम लगाना है और काम शुरू करना है। ऐसी ही सुविधाओं के निर्माण से भारत दुनिया की बिजनेस कैपिटल बनने का सपना साकार कर सकता है।"

दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे का दिल्ली-दौसा-लालसोट खंड राष्ट्र को समर्पित

विकसित भारत के विराट संकल्प की ओर एक बड़ा कदम

जब सड़कें, रेलवे स्टेशन, रेलवे ट्रैक, मेट्रो, एयरपोर्ट आधुनिक बनते हैं तो देश की प्रगति को गति मिलती है। इंफ्रास्ट्रक्चर पर लगाई गई राशि, जमीन पर कई गुना ज्यादा असर दिखाती है। बीते 9 वर्षों से केंद्र सरकार भी इंफ्रास्ट्रक्चर पर निरंतर निवेश बढ़ा रही है। नये भारत में विकास, प्रगति और कनेक्टिविटी में बढ़ोतरी के मद्देनजर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का जोर देश में उत्कृष्ट सड़क इंफ्रास्ट्रक्चर तैयार करने पर है। इस दृष्टिकोण को वास्तविकता में बदलने के लिये देशभर में अनेक विश्वस्तरीय एक्सप्रेसवे का निर्माण किया जा रहा है। ऐसी ही एक महत्त्वपूर्ण परियोजना है दिल्ली-मुम्बई एक्सप्रेसवे, जिसके पहले चरण दिल्ली-दौसा-लालसोट सेक्शन का प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 12 फरवरी को किया उद्घाटन...

जब सरकार, हाईवे-रेलवे, पोर्ट-एयरपोर्ट पर निवेश करती है, ऑप्टिकल फाइबर बिछाती है, डिजिटल कनेक्टिविटी बढ़ाती है, गरीबों के करोड़ों घर बनाती है, मेडिकल कॉलेज बनवाती है तब सामान्य आदमी से लेकर व्यापार-कारोबार करने वाले, छोटी दुकान लगाने वालों से लेकर बड़ी इंडस्ट्री तक सभी को बल मिलता है। सीमेंट, सरिया, रेत, बजरी सहित ऐसे कई दूसरे सामानों के व्यापार से लेकर ट्रांसपोर्ट तक आसान होता है और सबको इसका लाभ पहुंचता है। इन उद्योगों में अनेक नए रोजगार बनते हैं। इंफ्रास्ट्रक्चर पर जितना अधिक निवेश होता है, उतना ही रोजगार भी बढ़ता है। दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे के निर्माण के दौरान भी ऐसे अनेक लोगों को अवसर मिला है। यानि सड़कें सिर्फ मार्ग ही नहीं बल्कि विकसित राष्ट्र के निर्माण में भागीदार भी बनती हैं। राजस्थान के दौसा में दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे के दिल्ली-दौसा-लालसोट खंड राष्ट्र को समर्पित करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा, "आज दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे का पहला चरण राष्ट्र को समर्पित करते हुए मुझे बहुत गर्व हो रहा है। यह देश के सबसे बड़े और सबसे आधुनिक एक्सप्रेसवे में से एक है। यह विकसित होते भारत की एक और भव्य तस्वीर है।" भारत में सड़कों का नेटवर्क लगभग 63.73 लाख किमी है, जो दुनिया में सबसे विशाल है। साथ ही, देशभर में 27 ग्रीनफील्ड एक्सप्रेसवे भी विकसित किए जा रहे हैं। जब यह इंफ्रास्ट्रक्चर बनकर तैयार हो जाता है तो किसान, कॉलेज-दफ्तर आने-जाने वाले लोग, ट्रक-टैंपो चलाने वाले लोग, व्यापारी, सबको

प्रधानमंत्री मोदी के संबोधन को सुनने के लिए QR कोड Scan करें।

लगभग साढ़े तीन घंटे में तय होगी दिल्ली से जयपुर की दूरी

- दिल्ली-मुम्बई एक्सप्रेसवे का दिल्ली-दौसा-लालसोट सेक्शन 246 किलोमीटर लंबा है जिसे 12,150 करोड़ रुपये से अधिक की लागत से विकसित किया गया है।
- इस सेक्शन के चालू होने से दिल्ली से जयपुर की यात्रा पांच घंटे से कम होकर लगभग साढ़े तीन घंटे में पूरी हो जाएगी।
- इस सेक्शन पर परिचालन शुरू होने से पूरे क्षेत्र में आर्थिक विकास को भी शक्ति मिलेगी।

1,386 किलोमीटर लंबा है दिल्ली-मुम्बई एक्सप्रेसवे

- दिल्ली-मुम्बई एक्सप्रेसवे भारत का सबसे लंबा एक्सप्रेसवे होगा, जिसकी कुल लंबाई 1,386 किलोमीटर है।
- इसके बन जाने से दिल्ली और मुम्बई के बीच की यात्रा दूरी में 12 प्रतिशत की कमी आएगी और सड़क की लंबाई 1,424 किलोमीटर से कम होकर 1,242 किलोमीटर रह जायेगी।
- यात्रा के समय में भी 50 प्रतिशत की कमी आएगी। पहले जहां 24 घंटे लगते थे, वहीं सेक्शन पूरा होने पर 12 घंटे लगेंगे।
- यह एक्सप्रेसवे छह राज्यों - दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान, मध्य प्रदेश, गुजरात और महाराष्ट्र से होकर गुजरेगा और कोटा, इंदौर, जयपुर, भोपाल, वडोदरा और सूरत जैसे मुख्य शहरों को जोड़ेगा।
- एक्सप्रेसवे 93 पीएम गतिशक्ति इकोनॉमिक नोट्स, 13 बंदरगाहों, आठ प्रमुख हवाई अड्डों और आठ मल्टी मॉडल लॉजिस्टिक पार्कों को भी सुविधा प्रदान करेगा।
- इससे जेवर एयरपोर्ट, नवी मुम्बई एयरपोर्ट और जेएनपीटी पोर्ट जैसी निर्मित होने वाली ग्रीनफील्ड संरचनाओं को भी फायदा पहुंचेगा।
- इस एक्सप्रेसवे से आसपास के सभी क्षेत्रों के विकास पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। इस तरह देश के आर्थिक बदलाव में इसका महत्त्वपूर्ण योगदान सुनिश्चित होगा।

247 किलोमीटर लंबे राष्ट्रीय राजमार्ग परियोजनाओं की रखी आधारशिला

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने कार्यक्रम के दौरान 5,940 करोड़ रुपये से अधिक की लागत से विकसित होने वाली 247 किलोमीटर लंबी राष्ट्रीय राजमार्ग परियोजनाओं की आधारशिला भी रखी। इसमें बांदीकुई से जयपुर तक 2,000 करोड़ रुपये से अधिक की लागत से विकसित की जाने वाली 67 किलोमीटर लंबी चार लेन की छोटी सड़क, लगभग 3,775 करोड़ रुपये से विकसित की जाने वाली कोटपुतली से बड़ा ओदानियो तक छह लेन की छोटी सड़क एवं लगभग 150 करोड़ रुपये की लागत से विकसित किए जा रहे लालसोट-करौली खंड के दो लेन शामिल हैं।

अनेक प्रकार की सुविधाएं मिलती हैं और उनकी आर्थिक गतिविधि भी बढ़ती है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा, "इस वर्ष के बजट में तो हमने इंफ्रास्ट्रक्चर के लिए 10 लाख करोड़ रुपये की व्यवस्था की है जो 2014 की तुलना में 5 गुना अधिक है। इस निवेश का बहुत बड़ा लाभ राजस्थान को होने वाला है, यहां के गांव, गरीब और मध्यम वर्ग के परिवारों को होने वाला है।" राजस्थान में भी हाईवे के लिए बीते वर्षों में 50 हजार करोड़ रुपये से अधिक दिए गए हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा, "सबका साथ, सबका विकास राजस्थान और देश के विकास के लिए हमारा मूल मंत्र है। इसी मूल मंत्र का पालन कर हम एक सक्षम, समर्थ और समृद्ध भारत बना रहे हैं।" प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राजस्थान के दौसा में 18,100 करोड़ रुपये से अधिक लागत वाली सड़क परियोजनाओं का शिलान्यास और लोकार्पण किया।

नारी के नेतृत्व में
विकास की ओर बढ़ता भारत

बसुंधरा-तले भारत-रमणी नुहे हीन नुहे दीन
अमर कीरति कोटि युगे केभें जगतुं नोहिब लीन।

अर्थात्, भारत की नारी पृथ्वी पर किसी की तुलना में न तो हीन है, न दीन है। संपूर्ण जगत में उसकी अमर कीर्ति युगों-युगों तक कभी लुप्त नहीं होगी यानी सदैव बनी रहेगी। भारतीय साहित्य की अमर विभूति, स्वाधीनता सेनानी और ओडिया भाषा की सुप्रसिद्ध नारी कवि 'उत्कल भारती' कुंतला कुमारी साबत का लगभग 100 वर्ष पहले किया गया यह उद्घोष नए भारत की नीतियों को दिशा दे रहा है। स्वर्णिम वर्ष की ओर बढ़ते भारत में नारी शक्ति, नीति, निष्ठा, निर्णय शक्ति और नेतृत्व का प्रतिबिंब बनी है क्योंकि वेदों और भारतीय परंपरा ने भी यही आह्वान किया है कि नारी सक्षम हो, समर्थ हो और राष्ट्र को दिशा दे। अपने इसी दृष्टिकोण के साथ भारत ने जी-20 की अध्यक्षता करते हुए नारी शक्ति के नेतृत्व को अपनी प्राथमिकता में रख विश्व समाज को एक नई दिशा देने का निर्णय लिया है। आइए जानते हैं कि जब दुनिया अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस (8 मार्च) मना रही है तो आजादी के स्वर्णिम वर्ष की ओर बढ़ते भारत में महिला शक्ति की आकांक्षाओं को कैसे मिल रही है नई उड़ान...

यह नारी शक्ति के सामर्थ्य की सुनहरी प्रतिकृति है। नए भारत की नारी का प्रतिबिंब है। सामाजिक न्याय और आर्थिक सशक्तीकरण का मार्ग दिखाने वाली सुनहरी तस्वीर है। अमृत काल की शुरुआत का इससे सुनहरा अवसर नहीं हो सकता कि सामाजिक न्याय की प्रतिमूर्ति जनजातीय समुदाय से आने वालीं देश की पहली महिला राष्ट्रपति को देश की पहली पूर्णकालिक महिला वित्त मंत्री, स्वर्णिम भारत की दिशा निर्धारित करने वाला अमृत काल का पहला आम बजट भेंट कर रही हों। भारत के संसदीय इतिहास में ऐसा चित्र पहली बार ही देखने को मिला है। वह भी तब, जब भारत ने अमृत काल के लिए नारी के नेतृत्व में विकास का संकल्प लिया है और उसे साकार करने का आधार स्तंभ बीते लगभग 9 वर्षों में तैयार भी कर दिया है। अब जी-20 जैसे दुनिया के शक्तिशाली आर्थिक समूह की अध्यक्षता कर रहे भारत ने नारी शक्ति के नेतृत्व में विकास को वैश्विक एजेंडे में शामिल कर विश्व समाज को एक नई दिशा देने की पहल की है। *ऐसे में अमृत काल की शुरुआत के पहले अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस (8 मार्च 2023) का महत्व बढ़ गया है क्योंकि वही राष्ट्र-समाज प्रगति कर सकता है जो महिलाओं का सम्मान करता हो।*

इस बजट सत्र के लिए तो गर्व की बात है कि बजट सत्र का प्रारंभ महिला राष्ट्रपति के द्वारा होता है और बजट सत्र का विधिवत प्रारंभ महिला वित्त मंत्री के भाषण से होता है। देश में ऐसा संयोग पहले कभी नहीं आया जो आज आया है और हमारा तो प्रयास रहेगा कि ऐसे शुभ अवसर आगे भी देखने को मिले।

– नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

महिलाओं की सुरक्षा से लेकर उन्हें स्वावलंबी बनाने की दिशा में बीते 9 वर्षों में केंद्र सरकार ने कई महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं जिससे आधी आबादी को अपना हुनर दिखाने का सुरक्षित माहौल मिल रहा है। नए भारत की सोच महिला विकास तक सीमित नहीं है, बल्कि वह महिला के नेतृत्व में विकास की यात्रा पर निकल चुका है।

दरअसल, अमृत काल का पहला बजट और संसद का बजट सत्र नारी सम्मान का एक ऐसा अवसर लेकर आया, जहां संसद के संयुक्त सदन को महिला राष्ट्रपति ने संबोधित किया। पूरे देश के लिए एक गौरव का पल बना क्योंकि वर्तमान राष्ट्रपति का पहला उद्बोधन था। ऐसे में जनजातीय समुदाय से आने वालीं

गर्भावस्था से सक्षम

गर्भ में

प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना में गर्भवती और स्तनपान कराने वाली माताओं के खाते में नकद हस्तांतरण से प्रोत्साहित किया जाता है।

पहले बच्चे के मामले में दो किस्तों में **5,000** रुपये

दूसरे बच्चे के मामले में लड़की है तो **6,000** रुपये की सहायता दी जाती है।

अभी तक 2.8 करोड़ महिलाओं को लाभ मिला।

सामाजिक सुरक्षा संहिता, 2020 में सवेतन मातृत्व अवकाश को 12 सप्ताह से बढ़ाकर 26 सप्ताह किया गया।

नवजात व बचपन

मिशन पोषण 2.0 में 6 वर्ष से कम आयु के सभी बच्चे, गर्भवती महिलाएं और स्तनपान कराने वाली माताएं सेवा की पात्र हैं।

- 12.5 करोड़ बच्चे पीएम पोषण में अभी तक कवर।
- 100% फोर्टिफाइड चावल वितरित करने का निर्णय।
- 10.10 करोड़ लाभार्थी पारदर्शिता और सुदृढ़ता के लिए लॉन्च पीएम पोषण ट्रैकर एप्लीकेशन में पंजीकृत, 13.97 लाख आंगनवाड़ी कर रही है इस्तेमाल।

बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ

- बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ ने जनता की मानसिकता बदलने की दिशा में सामूहिक चेतना जगाई है। जन्म के समय लिंगानुपात 2014-15 में 918 था जो 2021-22 में 934 हो गया है, 16 अंकों का सुधार है।
- माध्यमिक स्तर पर स्कूलों में लड़कियों का नामांकन अनुपात भी 2014-15 में 75.51% था जो बढ़ कर 79.4% हो गया है

समर्थ बनाने तक ध्यान

जन्म से पढ़ाई तक

सुकन्या समृद्धि

- 2.70 करोड़ से अधिक सुकन्या खाते देश भर में अभी तक खोले जा चुके हैं। फरवरी के पहले पखवाड़े के दो दिन में डाक विभाग ने खोले 10.87 लाख सुकन्या खाते।
- 19,500 से अधिक गांवों को 'संपूर्ण सुकन्या ग्राम' घोषित किया गया।

इनोवेशन-रिसर्च

16 महिला टेक्नोलॉजी पार्क इनोवेशन और विज्ञान को सीखने के लिए महिलाओं को नए अवसर दे रहे हैं। इस क्षेत्र में किरण स्कॉलरशिप महिला वैज्ञानिकों के लिए मददगार साबित हुई है।

शिक्षा ऋण में आसानी के लिए 15 अगस्त, 2015 को विद्या लक्ष्मी पोर्टल की शुरुआत की गई।

दूरस्थ शिक्षा

100 पुरुषों के मुकाबले पीएचडी में 130, एमफिल में 109, स्नातकोत्तर में 122, डिप्लोमा में 104 और इंटीग्रेटेड कोर्स में 376 महिलाएं हैं।

ड्रॉपआउट कम, नामांकन में वृद्धि

33% की वृद्धि, स्कूलों में लड़कियों के नामांकन अनुपात में।

> **भारतीय संस्कृति में महिलाओं को सदैव ही सम्मानपूर्ण स्थान दिया गया है और महिलाएं समाज के सर्वोच्च स्थान पर प्रतिष्ठित रही हैं। आज भी हम लोग देवी दुर्गा, लक्ष्मी, काली और सरस्वती की पूजा करते हैं। यही नहीं, हम गांव में प्रवेश करने से पहले ग्राम देवी को भी नमन करते हैं। यह नारी शक्ति के प्रति अगाध सम्मान का प्रतीक है। नारी संतान को जन्म ही नहीं देती, उसका पालन-पोषण भी करती है। जो महिला-शक्ति संतान का पालन-पोषण करती है, वह पूरे समाज, राष्ट्र व विश्व का पालन-पोषण कर सकती है।**
>
> – द्रौपदी मुर्मु, राष्ट्रपति

देश की पहली महिला राष्ट्रपति संसद के संयुक्त सदन में अपना पहला संबोधन दे रही हों और एक महिला वित्त मंत्री 2047 के भारत का मार्गदर्शन करने वाला आम बजट पेश कर रही हों, तो अमृत काल में नारी शक्ति के महत्व को बखूबी महसूस किया जा सकता है।

सामाजिक न्याय ही नहीं, आर्थिक सशक्तीकरण भी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार की सोच है कि महिला सशक्तीकरण अब केवल सामाजिक न्याय का विषय नहीं है, बल्कि आर्थिक विकास के लिए भी बेहद महत्वपूर्ण है। इसका परिणाम है कि सेना हो या स्टार्टअप, ओलंपिक-पैरालंपिक हो या शोध, न्यू इंडिया में आज देश की बेटियां हर क्षेत्र में अपना परचम फहरा रही हैं। संसद में महिलाओं की भागीदारी का बढ़ना हो या ऐतिहासिक रूप से लिंगानुपात में पुरुषों के मुकाबले महिलाओं की संख्या का बढ़ना, यह बदलाव इस बात के संकेत हैं कि अमृत काल का नया भारत कितना सामर्थ्यशाली होगा। इसी गणतंत्र दिवस की परेड में महिला शक्ति का अभूतपूर्व प्रदर्शन, सीआरपीएफ की महिला टुकड़ी का शामिल होना, विभिन्न राज्यों, सेनाओं सहित अन्य झांकियां महिला

रोजगार व्यवसाय में

आरक्षण

जनवरी 2016 में केंद्र सरकार ने सीआरपीएफ, सीआईएसएफ में सिपाही पद की भर्ती में 33% महिला आरक्षण अनिवार्य किया। इस फैसले से महिलाओं के प्रति सोच में बदलाव आया है।

स्टैंड अप इंडिया

10 लाख रुपये से एक करोड़ रुपये तक के स्टैंड अप इंडिया योजना के तहत 81% ऋण महिला उद्यमियों को मिला।

मुद्रा योजना

68% ऋण महिलाओं के स्वामित्व वाले उद्यमों को स्वीकृत किए गए हैं।

स्टार्टअप इंडिया

स्टार्टअप इंडिया में दिसंबर 2022 तक **660** जिलों में **86,713** स्टार्टअप को मान्यता, इसमें **46%** में कम से कम एक महिला निदेशक।

गणतंत्र दिवस की परेड में पहली बार सीआरपीएफ की महिला टुकड़ी और बीएसएफ की महिला ऊंट सवार भी शामिल हुईं।

56.62% महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना(मनरेगा) में महिलाओं की भागीदारी है।

50 से अधिक कर्मचारियों वाले प्रतिष्ठान में अनिवार्य क्रेच सुविधा का प्रावधान ताकि कामकाजी महिलाओं को न हो कोई परेशानी।

महिलाओं की अनुमानित श्रम बल भागीदारी 2019-20 में **22.8%** थी जो 2020-21 में बढ़कर **25.1%** हो गई।

रात में काम करना हुआ आसान। रात्रि की पाली में पर्याप्त सुरक्षा व्यवस्था के साथ काम की अनुमति।

खेती का प्रशिक्षण

731 कृषि विकास केंद्र देशभर में हैं जिनमें किसान और खेतिहर महिलाओं को कृषि और संबद्ध क्षेत्रों में नवीनतम तकनीकों का प्रशिक्षण भी दिया जाता है।

नागर विमानन

देश में वैश्विक औसत से **10%** अधिक कॉमर्शियल महिला पायलट हैं।

रक्षा क्षेत्र

नौसेना में महिला पायलटों को शामिल किया गया है। युद्ध के लिए तैयार स्क्वॉड्रन में महिला पायलट शामिल। स्थायी कमीशन के लिए महिलाओं को राष्ट्रीय रक्षा अकादमी में शामिल करने की शुरूआत।

8.4 करोड़ महिलाएं **80** लाख महिला स्वयं सहायता समूह से जुड़ी हैं जो आर्थिक सशक्तीकरण का आधार है।

हर पड़ाव पर सुरक्षित वातावरण के लिए कदम...

वन स्टॉप सेंटर

- 733 वन स्टॉप सेंटर, निजी, सार्वजनिक, परिवार, समुदाय या कार्यस्थल पर हिंसा से पीड़ित महिलाओं की सहायता के लिए देश भर में खोले जा चुके हैं। इन केंद्रों पर 6.65 लाख से अधिक पीड़ित महिलाओं को मिली है अभी तक सहायता।
- देश के 13,101 पुलिस स्टेशनों में महिला सहायता डेस्क हो चुके हैं स्थापित।
- बलात्कार और पोस्को मामलों को तेजी से निपटाने के लिए ई-पोक्सो सहित 1023 फास्ट ट्रैक विशेष अदालतें गठित की गई हैं। यौन अपराधियों का राष्ट्रीय डेटाबेस भी बनाया जा रहा है।
- 418 विशेष पोक्सो अदालतों में दिसंबर 2022 तक 1,37,000 मामले निपटाये गए हैं।
- 2019 में पोस्को अधिनियम में संशोधन करके बच्चों पर यौन अपराध करने के लिए मृत्यु दंड तक का प्रावधान किया गया। पोस्को नियम, 2020 में स्कूलों व देखभाल गृहों के स्टाफ की अनिवार्य पुलिस जांच सहित कई अन्य प्रावधान किए गए।

सख्त प्रावधान

- आपराधिक कानून (संशोधन) अधिनियम 2018 को पारित कर बलात्कार के दोषियों के लिए फांसी तक की सजा का प्रावधान।
- सरकारी स्कूलों में कक्षा 6 से 12 तक की लड़कियों को आत्मरक्षा के गुर सिखाने की शुरुआत की गई।

डीएनए विश्लेषण के लिए इकाइयां

- 190 करोड़ रुपये की लागत से 20 राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों में डीएनए विश्लेषण इकाइयों की स्थापना और अपग्रेडिंग को स्वीकृति।

नारी शक्ति की सुरक्षा

- एक राष्ट्र, एक आपातकालीन नंबर 112 लांच, 35 राज्यों- केंद्र शासित प्रदेशों में चालू।
- शी (She) यौन उत्पीड़न के मामले में शिकायत करने और उसकी निगरानी के लिए ऑनलाइन व्यवस्था की शुरुआत 2017 में की गई।

सशक्तीकरण को समर्पित थी। नारी शक्ति का सम्मान नए भारत को दर्शाता है। साथ ही, पद्म पुरस्कारों में समाज के लिए प्रेरणा बनीं गुमनाम महिलाओं को सम्मानित करना, अमृत यात्रा की सुखद अनुभूति कराता है। अमृत काल के पहले आम बजट में महिला सम्मान बचत पत्र की पहल की गई है जिसमें मार्च 2025 तक उनके लिए नई लघु बचत योजना लाई गई है। इस योजना में साढ़े सात फीसदी की वार्षिक ब्याज दर पर 2 लाख रुपये 2 साल के लिए जमा किया जा सकेगा। 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' सहित महिलाओं के लिए संवेदनशीलता के साथ बनी राष्ट्र की नीतियों ने समाज को जागृत किया है। लोग अब बेटियों को आत्मनिर्भरता की उड़ान भरते देखना चाहते हैं। उनका भविष्य सुरक्षित करना चाहते हैं। महिलाएं आज राष्ट्र के सपनों के अनुरूप विश्व स्तर पर अपनी कीर्ति पताका लहरा रही हैं। महिलाओं की इस प्रगति के पीछे केंद्र सरकार के प्रयासों का ही संबल रहा है।

बीते लगभग 9 वर्षों में केंद्र सरकार द्वारा जितनी भी कल्याणकारी योजनाएं शुरु की गई हैं, उनके केंद्र में महिलाओं का जीवन आसान बनाना, महिलाओं को रोजगार-स्वरोजगार के नए अवसर देना और महिला सशक्तीकरण रहा है। महिला उत्थान में जहां पुरानी धारणाओं और पुरानी मान्यताओं को तोड़ना भी पड़ा, उससे भी सरकार पीछे नहीं हटी है। 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' अभियान द्वारा केंद्र सरकार के प्रयासों से समाज में जो चेतना आई, उससे बेटियों की संख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है। देश में पहली बार

जीवन में सुगमता के लिए

11.60 करोड़ शौचालयों का निर्माण स्वच्छ भारत मिशन के तहत हुआ। इसने महिलाओं के जीवन को बदल कर गौरवपूर्ण बनाया है।

सांसों को मिली धुएं से आजादी

- 9.6 करोड़ से अधिक गरीब परिवारों को उज्ज्वला योजना के तहत देशभर में गैस कनेक्शन दिए गए।
- विश्व स्वास्थ्य संगठन का आकलन है कि पारंपरिक ईंधन- लकड़ी, कोयला आदि से खाना पकाने से भारत में सालाना 5 लाख मौतें होती थीं। लेकिन केंद्र सरकार के इस प्रयास से महिलाओं में सांस संबंधी बीमारी के मामलों में 20 फीसदी की कमी आई है।

कोविड में आर्थिक सहायता

20.50 करोड़ महिला लाभार्थियों के बैंक खाते में 31,000 करोड़ रुपये हस्तांतरित किए गए।

9,082 से ज्यादा जन औषधि केंद्रों के माध्यम से देशभर में मात्र 1 रुपये में सैनेटरी नैपकिन उपलब्ध कराए जा रहे हैं।

आवास योजना

2015 में शुरू प्रधानमंत्री आवास योजना में जमीन और मकान का मालिकाना हक पाने वाली महिलाओं की संख्या में बढ़ोतरी हुई।

2015 से लेकर अब तक 204 महिलाओं को उनके अभूतपूर्व कार्यों के लिए पद्म सम्मान दिया गया है। वर्ष 2022 में घोषित पद्म सम्मानों में भी 34 पद्म पुरस्कार अलग-अलग क्षेत्रों में काम कर रही महिलाओं को मिले थे। यह अपने आप में एक रिकॉर्ड है। आज तक कभी इतनी ज्यादा महिलाओं को पद्म सम्मान नहीं मिला है। इस वर्ष घोषित सूची में 19 महिलाएं शामिल हैं।

भारत इस वर्ष जी-20 समूह की अध्यक्षता कर रहा है। भारत के जी-20 एजेंडा में महिला के नेतृत्व में विकास पर प्राथमिकता बनाए रखना शामिल है। मुझे विश्वास है कि भारत द्वारा, जी-20 फोरम का उपयोग महिला सशक्तीकरण को बढ़ावा देने तथा विश्व समुदाय के समावेशी विकास में महिलाओं की भूमिका को रेखांकित करने के लिए किया जाएगा।

– द्रौपदी मुर्मु, राष्ट्रपति

पुरुषों की तुलना में महिलाओं की संख्या अधिक हुई है एवं महिलाओं का स्वास्थ्य भी पहले के मुकाबले और बेहतर हुआ है। प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान हो या फिर प्रधानमंत्री मातृवंदना योजना, इनसे मां और बच्चे, दोनों के जीवन को बचाने में हम सफल रहे हैं। आयुष्मान भारत योजना की भी लगभग 50 प्रतिशत लाभार्थी महिलाएं ही हैं।

अगर अमृत काल के आम बजट में महिलाओं के लिए की गई पहल की बात की जाए तो शहरी या ग्रामीण महिलायें हों, कारोबार-रोजगार में व्यस्त महिलायें हों, या घर के काम में व्यस्त महिलायें हों, उनके जीवन को आसान बनाने के लिए बीते वर्षों में सरकार ने अनेक कदम उठाएं हैं। जल जीवन मिशन हो, उज्ज्वला योजना हो, पीएम-आवास योजना हो, ऐसे अनेक कदमों को बहुत बड़ी ताकत के साथ आगे बढ़ाया जाएगा। उसके साथ-साथ महिला स्वयं सहायता समूह, एक बहुत बड़ा सामर्थ्यवान क्षेत्र आज भारत में बहुत बड़ी जगह प्राप्त कर चुका है, उनको अगर थोड़ा सा बल मिल जाए तो वह अचंभित कर सकते हैं। इसलिए महिला स्वयं सहायता समूह, उनके सर्वांगीण विकास के लिए नई पहल इस बजट में एक नया आयाम जोड़ेगी। महिलाओं के लिए एक विशेष बचत योजना भी शुरू की जा रही है और जन धन खाते के बाद यह विशेष बचत योजना सामान्य परिवार की गृहिणी को बहुत बड़ा संबल देने वाली है।

बेटियों के लिए सुविधा के साथ खुल रहा आसमां

केंद्र सरकार बेटियों की पढ़ाई से लेकर उनके करियर तक हर बाधा को दूर करने का प्रयास कर रही है। देश के सरकारी स्कूलों में बालिकाओं के लिए अलग शौचालयों का निर्माण हो या फिर सैनिटेरी पैड्स से जुड़ी योजना, इससे बेटियों के ड्रॉप आउट रेट में बहुत कमी आई है। स्वच्छ भारत अभियान से महिलाओं की गरिमा तो बढ़ी ही है, इससे एक सुरक्षित माहौल भी उन्हें मिला है। सुकन्या समृद्धि योजना से देश भर की करोड़ों बेटियों के बेहतर भविष्य के लिए पहली बार बचत खाते खुले हैं। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी बेटियों की शिक्षा के लिए अनेक महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं। केंद्र सरकार ने यह भी सुनिश्चित किया है कि किसी भी काम, किसी भी कार्यक्षेत्र में महिलाओं के लिए कोई रुकावट न हो। इसलिए खनन क्षेत्र से लेकर सेना में अग्रिम मोर्चों तक, हर सेक्टर में महिलाओं की भर्ती को खोल दी गई है। सैनिक स्कूलों से लेकर मिलिट्री ट्रेनिंग स्कूलों तक में, अब देश की बेटियां पढ़ाई और ट्रेनिंग कर रही हैं। भारत की नारी शक्ति आज अंतरिक्ष में उड़ान भर रही हैं।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार ही है जिसने मातृत्व अवकाश को 12 सप्ताह से बढ़ाकर 26 सप्ताह किया है। आज मुद्रा योजना की लगभग 70 प्रतिशत लाभार्थी महिला उद्यमी ही हैं। एक अध्ययन के अनुसार, इस योजना से, महिलाओं की आर्थिक शक्ति और सामाजिक निर्णयों में उनकी भागीदारी बढ़ी है। प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत मिलने वाले घरों की रजिस्ट्री भी महिलाओं के नाम पर होने से महिलाओं का आत्मविश्वास बढ़ा है। जनधन योजना से पहली बार देश में बैंकिंग सुविधाओं में महिलाओं और पुरुषों के बीच अब बराबरी आ गई है। देश में इस समय 80 लाख से ज्यादा महिला स्वयं सहायता समूह भी काम कर रहे हैं, जिनमें करीब नौ करोड़ महिलाएं जुड़ी हुई हैं। इन महिला स्वयं सहायता समूहों को केंद्र सरकार द्वारा लाखों करोड़ रुपये की मदद दी जा रही है।

हम लोग एक बात कभी-कभी बोलते हैं, नारी तू नारायणी। लेकिन ध्यान देने वाली बात यह भी है कि हमारे यहां कहा जाता है, नर करणी करे तो नारायण हो जाए। यानी नर को नारायण होने के लिए कुछ करना पड़ेगा। लेकिन नारी के लिए क्या कहा है, नारी तू नारायणी। अब देखिए कितना बड़ा फर्क है। हम बोलते रहते हैं, लेकिन अगर सोचा तो हमारे पूर्वजों ने कितने गहन चिंतन से हम पुरूषों के लिए कहा, नर करणी करे तो नारायण हो जाए। लेकिन माताओं-बहनों के लिए कहा, नारी तू नारायणी।

– नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

सशक्तीकरण और सामर्थ्य का प्रतिबिंब

घर के प्रमुख फैसलों में बढ़ी भागीदारी

- 88.7% महिलाएं अब प्रमुख घरेलू फैसलों में भाग लेती हैं, पांच वर्ष पहले यह भागीदारी 84% थी। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण 5 के अनुसार।

लिंगानुपात

महिलाओं की संख्या पहली बार एक हजार पुरुषों के मुकाबले **1020** हुई, राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण-5 में।

शादी की उम्र

लड़कियों की शादी की उम्र **18** से बढ़ाकर **21** साल करने के लिए दिसंबर, 2021 में बाल विवाह निषेध (संशोधन) अधिनियम, लोकसभा में पेश किया गया।

48 करोड़ जन धन बैंक खाते खोले गए। इसमें 32 करोड़ खाते ग्रामीण क्षेत्रों और कस्बों के हैं। 53% खाते ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं के हैं।

संसद में नेतृत्व

2019 के आम चुनाव में पहली बार रिकॉर्ड 78 महिलाएं सांसद चुनकर आई हैं तो पंचायती राज व्यवस्था में बड़ी भागीदारी की वजह से 46% महिलाएं महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

तीन तलाक खत्म

मुस्लिम महिला विवाह अधिकार संरक्षण अधिनियम 2019 में राष्ट्रपति के हस्ताक्षर के बाद लागू हुआ। इसे 19 सितंबर 2018 से प्रभावी माना गया। कानून का उल्लंघन करने पर तीन वर्ष के कारावास और जुर्माने का प्रावधान किया गया है।

आजादी का अमृत महोत्सव के स्मरणस्वरूप मार्च 2025 तक दो वर्ष की अवधि के लिए एककालिक नई लघु बचत योजना, महिला सम्मान बचत प्रमाण पत्र उपलब्ध कराया जाएगा। यह महिलाओं या बालिकाओं के नाम पर आंशिक निकासी विकल्प के साथ 2 वर्षों की अवधि के लिए 7.5 प्रतिशत की नियत ब्याज दर पर 2 लाख रुपये तक की जमा सुविधा का प्रस्ताव देगा।

- निर्मला सीतारमण, केंद्रीय वित्त एवं कॉरपोरेट कार्य मंत्री

सुरक्षित वातावरण हो रहे उपलब्ध

2014 में केंद्र में नई सरकार बनने के बाद से राष्ट्रीय स्तर पर महिला सुरक्षा से जुड़े अनेकों प्रयास किए गए हैं। आज देश की प्राथमिकता, महिलाओं का जीवन बेहतर बनाने और भारत की विकास यात्रा में महिलाओं की संपूर्ण भागीदारी में है। बेटे-बेटी को एक समान मानते हुए बेटियों के विवाह की आयु को भी 21 वर्ष करने पर केंद्र सरकार विचार कर रही है। आज देश में महिलाओं के खिलाफ अपराध पर कड़े कानून हैं, बलात्कार जैसे जघन्य मामलों में फांसी का भी प्रावधान किया गया है। देशभर में फास्ट ट्रैक अदालतें बनाई जा रही हैं और कानूनों का सख्ती से अनुपालन कराने के लिए भी व्यवस्थाओं को सुधारा जा रहा है। थानों में महिला सहायता डेस्क की संख्या बढ़ाना हो, चौबीस घंटे उपलब्ध रहने वाली हेल्पलाइन हो, साइबर क्राइम से निपटने के लिए पोर्टल हो, ऐसे अनेक प्रयास महिलाओं की सुरक्षा का कवच बन रहे हैं। एक दौर था जब देश ने 'निर्भया कांड' जैसी तस्वीर और असुरक्षा का माहौल देखा था, लेकिन अब मौजूदा केंद्र सरकार महिलाओं के खिलाफ अपराध पर 'जीरो टॉलरेंस' की नीति से काम कर रही है। ट्रिपल तलाक जैसी सदियों की कुप्रथाओं से न्याय दिलाकर संरक्षण और लड़ने की शक्ति दी है- ट्रिपल तलाक कानून की महत्ता का अंदाजा इससे लगाया जा सकता है कि इसके लागू होने के बाद सिर्फ दो-तीन साल में ही तीन तलाक के मामले में 80 से 82 फीसदी की कमी आई है, जो मुस्लिम महिलाओं को आत्मसम्मान और सुरक्षा का भाव प्रदान करने वाली है।

कानूनी संरक्षण ही नहीं, महिलाओं के आत्मसम्मान के लिए केंद्र सरकार ने तो अभियान चला रखा है। केंद्र सरकार की अधिकांश योजनाओं के जरिए परिवार की महिलाओं को ही केंद्र में रखकर दस्तावेज दिए जाते हैं। इतना ही नहीं, पहले जम्मू-कश्मीर में गैर कश्मीरी से विवाह करने पर वहां की महिलाओं और उनके बच्चों को पैतृक संपत्ति के हक से वंचित कर दिया जाता था। लेकिन अनुच्छेद 370 और 35ए को निरस्त किए जाने के बाद इस क्षेत्र की महिलाओं को उनका हक मिला है। प्रवासी भारतीयों द्वारा शादी करने और फिर छोड़ देने जैसे मामलों में भी कानून को सख्त बनाया गया है।

भारत की महिलाएं आज स्वतंत्र हैं, आर्थिक रूप से सशक्त है, दृढ़ संकल्प से लैस हैं, सुरक्षा का भाव है और सिर्फ सपने देख नहीं रहीं, बल्कि उसे साकार भी कर रही हैं तो उसकी बड़ी वजह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली दृढ़ निश्चयी सरकार के प्रयास हैं। जिसकी वजह से दशकों से चली आ रही लड़की या महिला को कमतर मानने की सोच में क्रांतिकारी बदलाव आया है।

नारी शक्ति से अमृत यात्रा

अमृत काल में नारी शक्ति का अभ्युदय सुनिश्चित हो, इसके लिए सशक्तीकरण की इस यात्रा को तेज गति से आगे बढ़ाना सभी का दायित्व है। केंद्र सरकार की सोच है कि नारी शक्ति के प्रति सम्मान के साथ नए दृष्टिकोण का उद्देश्य केवल एक प्रतीक न हो, बल्कि वास्तविक हो, हर स्तर पर, हर क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी और नेतृत्व सुनिश्चित हो। महिला सशक्तीकरण केवल सामाजिक न्याय का मुद्दा नहीं है, यह एक आर्थिक अनिवार्यता भी है। जब महिलाएं सशक्त होती हैं तो देश आगे बढ़ता है। विभिन्न अध्ययनों से पता चला है कि जब महिलाओं को शिक्षा और नौकरी में समान अवसर दिए जाते हैं तो उनकी कार्यबल में शामिल होने की संभावना बढ़ जाती है, जिससे देश की अर्थव्यवस्था और मजबूत होती है। जब भारत विश्व की पांचवी बड़ी अर्थव्यवस्था बनकर पांच ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने की ओर अग्रसर है, तब इस विराट लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए महिलाओं की और अधिक सक्रिय भूमिका सहायक सिद्ध होगी। वास्तव में अगर महिलाएं और अधिक शिक्षित-सक्षम होंगी तो विश्व समुदाय और अधिक प्रगतिशील तथा विकसित हो जाएगा, अनेक विसंगतियों से मुक्त हो जाएगा।

अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष की रिपोर्ट के मुताबिक पुरुषों के समान महिलाओं की कार्यबल में हिस्सेदारी से भारत की जीडीपी में 27 प्रतिशत की बढ़ोतरी हो सकती है। यदि 50 प्रतिशत कुशल महिलाएं कार्यबल में शामिल होती हैं तो विकास दर 1.5 प्रतिशत बढ़कर 9 प्रतिशत प्रति वर्ष हो सकती है।

“ दीनदयाल अंत्योदय योजना राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन ने ग्रामीण महिलाओं को 81 लाख स्वयं सहायता समूहों के रूप में संगठित कर उल्लेखनीय सफलता हासिल की है। अब हम यह सुनिश्चित करेंगे कि उन विशाल उत्पादक उद्यमों या सामूहिक संस्थाओं के गठन के जरिए यह समस्त समूह आर्थिक विकास के अगले चरण में पहुंच जाएं जिनमें से प्रत्येक में हजारों सदस्य होंगी और उनका प्रबंधन प्रोफेशनल ढंग से होगा।

- निर्मला सीतारमण,
केंद्रीय वित्त एवं कॉरपोरेट कार्य मंत्री

बनेगा आत्मनिर्भर, होंगे पूरे हर सपने जब साथ चलेगी आधी आबादी।
आधे आसमान की पूरी उड़ान में ही छिपी खुशियों की हर चाभी।
तू बस आगे बढ़के ठान ले तो कदमों पर तेरे है कामयाबी।
स्वतंत्रता, संस्कृति, सम्मान, शक्ति सब तुझसे ही है।
वो आत्मविश्वासी नारी तू नारायणी।। ●

नारी शक्ति से सुशोभित हो रहा 'पद्म'

जमीन से लेकर आसमां और नागरिक सम्मान तक महिलाओं की बढ़ती भागीदारी

संपूर्ण मानव जाति का विकास तभी माना जाएगा जब पृथ्वी की आधी आबादी का विकास पुरुषों की तुलना में ज्यादा तेज गति से हो। इस दिशा में भारत तेजी से आगे बढ़ रहा है। इसी का परिणाम है कि कभी मां, कभी बहन, कभी बेटी तो कभी पत्नी के रूप में सशक्त मानी जाने वाली महिला आज अपने आत्मबल और दृढ़ इच्छाशक्ति से हर कार्य क्षेत्र में न केवल अपना बल्कि देश का नाम भी रौशन कर रही हैं। नए भारत में इन नारी शक्ति की नई पहचान दुनिया के सामने आ रही है तो देश के नागरिक सम्मान से सम्मानित होने वालीं महिलाएं बन रही हैं युवा पीढ़ी की प्रेरणा...

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः"

अर्थात् जहां पर स्त्रियों की पूजा होती है, वहां देवता निवास करते हैं। जहां पर ऐसा नहीं होता है वहां पर सभी कार्य निष्फल होते हैं। भारतीय संस्कृति में नारी सम्मान की संपूर्णता मात्र इस एक श्लोक से ही स्पष्ट हो जाती है। महिला शक्ति के बिना किसी राष्ट्र की समृद्धि की कल्पना भी नहीं की जा सकती। ऐसे में केवल नारी उत्थान नहीं, नारी के नेतृत्व में विकास की दृष्टि बीते चंद वर्षों में राष्ट्र की नीति बनी है। साथ ही, इसमें केंद्र सरकार की संवेदनशील सोच ने समाज में जन-जन को जागृत भी किया है और अब बेटियां स्वाभिमान बनकर उभर रही हैं। जिससे न सिर्फ नारी शक्ति का सम्मान बढ़ा बल्कि घर से निकल कर विकसित भारत बनाने के लिए देश की आधी आबादी अपना बहुमूल्य योगदान दे रही हैं। वर्तमान केंद्र सरकार में नारी को उनके हक का राष्ट्रीय स्तर पर सम्मान भी मिल रहा है, इससे आने वाली पीढ़ी और सशक्त और ऊर्जावान होगी। भारत सरकार की ओर से प्रति वर्ष जो नागरिक सम्मान दिया जाता है उसमें महिलाओं ने इस वर्ष भी बौद्धिकता के बल पर अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज कराई। इस बार कुल 19 महिलाओं को पद्म सम्मान मिला जिसमें 16 को पद्म श्री और तीन को पद्म भूषण सम्मान देने की घोषणा हुई है।

न्यू इंडिया समाचार ने ऐसे ही कुछ पद्म पुरस्कार विजेताओं से बात की जो पिछले कई वर्षों से बिना किसी प्रचार-प्रसार और आडंबर के अपनी प्रतिभा के बल पर देश-दुनिया में न सिर्फ राष्ट्र का नाम रौशन कर रही हैं बल्कि सनातन संस्कृति और वैदिकता के साथ-साथ पुरानी कलाकृतियों को जीवित रखने और उसे अगली पीढ़ी तक पहुंचाने के काम में जुटी हैं।

उषा बारले

पहले जो लोग मना करते थे अब दे रहे बधाई

छत्तीसगढ़ के दुर्ग की रहने वाली उषा बारले को पद्म श्री सम्मान देने का निर्णय लिया गया है। बारले को सात वर्ष की उम्र से ही पंडवानी लोक गीत के प्रति लगाव रहा। उम्र बढ़ने के साथ-साथ लगाव बढ़ता गया और लोक संगीत का यह दायरा घर-परिवार से निकल कर समाज और देश-प्रदेश होते हुए विश्व के कुछ देशों तक पहुंच गया। बारले कहती हैं कि शुरुआती दौर में लोग कहते थे कि किस तरह की गीत-संगीत में लगी है, लेकिन समय बढ़ता गया और पंडवानी संगीत के प्रति मेरा रुझान बढ़ता चला गया। समय के साथ लोगों की ओर से इस लोक संगीत को खूब पसंद किया जाने लगा। अलग-अलग कार्यक्रमों में गीत प्रस्तुति के लिए बुलाया जाने लगा। इसका नतीजा यह हुआ कि मुझे प्रदेश के साथ-साथ दूसरे राज्यों में भी लोग जानने लगे। संगीत प्रेमी और कला-संगीत की समझ रखने वाले करीबी लोगों के कहने पर मैंने देश के नागरिक सम्मान के लिए आवेदन किया। हालांकि करीब पिछले 21 वर्षों से इस सम्मान के लिए प्रयास कर रही थीं लेकिन अंततः इस वर्ष केंद्र की वर्तमान सरकार की ओर से पद्म सम्मान देने का निर्णय लिया गया। यह न सिर्फ मेरे लिये बल्कि जो लोग लोक-संगीत को नजरअंदाज करते हैं और गुमनामी में रहकर अपनी संस्कृति को जिंदा रखे हैं, उनके लिए भी यह अवार्ड प्रेरणास्रोत साबित होने वाला है। 45 से अधिक वर्षों से वह इस लोक संगीत को गा रही हैं।

होमोप्रोवा चुटिया

रेशम पर सपने बुनते-बुनते अध्यात्म से जुड़ी

असम के डिब्रूगढ़ जिला स्थित मोरान की रहने वाली होमोप्रोवा चुटिया को भी पद्म श्री सम्मान देने का निर्णय लिया गया है। कहा जाता है कि असम की महिलाएं रेशम पर अपने सपने को बुन सकती हैं लेकिन उन्होंने अपनी बुनाई कौशल से कई सुंदर रचनाएं बनाई। इन्होंने सूती, रेशमी और बारीक कटे बांस के टुकड़ों और विभिन्न प्रकार के कपड़ों का उपयोग करके कई तरह के धार्मिक ग्रंथ तैयार किए। 280 फीट लंबे और दो फीट चौड़े कपड़े के टुकड़े में अंग्रेजी भाषा में पूरी भगवद गीता की बुनाई की। इनमें एक विशेष खासियत यह है कि इन्होंने कपास और रेशम गोमोशा में सुंदर डिजाइन बनाने के लिए मोतियों का इस्तेमाल किया जो इस क्षेत्र में इस्तेमाल होने वाले डिजाइन से बहुत अलग है।

> **280 फीट लंबाई और दो फीट चौड़े कपड़े के टुकड़े में अंग्रेजी भाषा में पूरी भगवद गीता की बुनाई की।**

सुमन कल्याणपुर

आज भी लोगों के दिलों में हैं सुमन कल्याणपुर

सुमन कल्याणपुर लगभग 30 वर्षों से गायिकी से दूर हैं लेकिन आज भी इनकी आवाज लोगों के दिलों के करीब है। शायद यही वजह रही कि इतने वर्षों बाद 85 वर्ष की उम्र में सुमन कल्याणपुर को पद्म भूषण सम्मान देने का निर्णय लिया गया। चार दशकों से भी ज्यादा समय तक संगीत प्रेमियों को अपनी आवाज से रोमांचित किया और आज भी इनके गाने सुन कर दिल को सुकून मिलता है। इन्होंने 750 से अधिक गीत गाए हैं जिसमें एलबम के अलावा हिन्दी, मराठी, बांग्ला, असमी सहित कुल 11 भाषाओं में अपनी आवाज दी। 10 से ज्यादा संगीतकारों के साथ इन्होंने काम किया जिसमें शंकर जयकिशन, एसडी बर्मन और लक्ष्मीकांत प्यारेलाल शामिल हैं। मोहम्मद रफी के साथ जुगलबंदी में 140 से अधिक गीत गाए। इन्हें महाराष्ट्र सरकार की ओर से लता मंगेशकर अवार्ड के साथ-साथ लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड और मिर्ची म्यूजिक अवार्ड से भी सम्मानित किया गया।

वाणी जयराम

भजन से लेकर परंपरागत, पॉप और गजल को दी आवाज

गुड्डी फिल्म की वह मशहूर प्रार्थना 'हम को मन की शक्ति देना' भारत के कई स्कूलों में आज भी प्रार्थना के तौर पर गायी जाती है, इसे अपनी आवाज देने वाली तमिलनाडु की मशहूर गायिका वाणी जयराम को भी पद्म भूषण देने का निर्णय लिया गया। 50 वर्षों से ज्यादा समय से अपने गीतों से संगीत प्रेमियों का मन मोहने वाली इस गायिका ने 20 हजार से ज्यादा फिल्मी गाने और भजन गाए हैं। उन्होंने 15 से अधिक भाषाओं में गीत गाए जिसमें हिन्दी, तमिल, मलयालम, मराठी, और गुजराती शामिल है। पॉप म्यूजिक, गजल, भजन, परंपरागत भारतीय शास्त्रीय संगीत और लोक गीतों को अपनी आवाज दी। आठ वर्ष की उम्र से उन्होंने ऑल इंडिया रेडियो पर अपनी प्रस्तुति देनी शुरू कर दी थी। सबसे कम उम्र में संगीत पीठ सम्मान पाने वाली गायिका बनीं। वर्ष 1976, 1980 और 1992 में राष्ट्रीय सम्मान से भी सम्मानित किया गया।

डॉ. सुकामा आचार्य

शिक्षा के साथ-साथ संस्कार और अध्यात्म जरूरी

हरियाणा के रोहतक में विश्ववारा कन्या गुरुकुल रुड़की की आचार्य डॉ. सुकामा आचार्य को भी पद्म श्री दिए जाने की घोषणा हुई है। डॉ.सुकामा ने महिला सशक्तीकरण एवं शिक्षा में अपना अहम योगदान दिया। 34 वर्षों से ज्यादा समय से वैदिक संस्कृति के लिए काम कर रही हैं। गुरुकुल में कन्याओं को संस्कारवान शिक्षा देने में जुटी हैं। उनका मानना है कि वर्तमान समय में केवल शिक्षा से काम नहीं चलेगा। शिक्षा के साथ-साथ संस्कार व अध्यात्म होना बहुत जरूरी है। इस गुरुकुल में भारत के 10 से ज्यादा राज्यों के 800 से ज्यादा लड़कियों को शिक्षा दी जा रही है। यहां 45 से अधिक महिला शिक्षक हैं। इन्हें संस्कृति सेवा सम्मान से भी सम्मानित किया जा चुका है।

के.सी.रुनरेमसंगी

मिजो लोक संगीत को दे रहीं बढ़ावा

मिजोरम के आइजोल की रहने वाली लोक गायिका के.सी.रुनरेमसंगी को पद्म श्री सम्मान देने का निर्णय लिया गया है। तीन दशकों से ज्यादा समय से देश में मिजो लोक संगीत को बढ़ावा देने पर काम कर रही हैं। रुनरेमसंगी ने बताया कि कम उम्र में गायन और नृत्य को सिर्फ शौक के लिए अपनाया था लेकिन धीरे-धीरे संगीत में रूचि बढ़ती गई और लोग भी उनकी इस लोक गायकी से प्रभावित होने लगे। शुरुआती दौर में चर्च के कार्यक्रमों और शादी समारोहों में मिजो गीत गाती थीं। आकाशवाणी में भी पंजीकरण कराया था। लोक, धर्म शिक्षा और प्रेम सहित विभिन्न शैलियों में लगभग 50 से अधिक मिजो गीत रिकॉर्ड किए। लोक संगीत के क्षेत्र में उनके योगदान को देखते हुए वर्ष 2017 में उन्हें संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

सुभद्रा देवी

पेपर मेसी कला को रखा है जीवंत

बिहार के मधुबनी की रहने वाली सुभद्रा देवी को पेपर मेसी कला में उत्कृष्ट योगदान के लिए पद्म श्री सम्मान देने का निर्णय लिया गया है। 65 वर्षों से अधिक समय से सुभद्रा देवी इस कला में जुटी हैं। उनकी कृति पर केंद्रित कई आर्ट और क्रॉफ्ट वर्कशॉप का आयोजन किया गया। ब्रिटिश म्यूजियम और इंटरनेशनल इंडियन फोक आर्ट गैलरी में भी भागीदारी की। सुभद्रा देवी को वर्ष 1980 में राज्य स्तरीय और वर्ष 1992 में राष्ट्रीय सम्मान से भी सम्मानित किया गया।

जोधइया बाई बैगा

अपनी कला से आदिवासी महिलाओं और बच्चों के जीवन यापन में कर रहीं मदद

चित्रकला के क्षेत्र में बेहतर कार्य करने वाली मध्य प्रदेश की जोधइया बाई बैगा को चित्रकारी के लिए पद्म श्री सम्मान देने का निर्णय लिया गया है। अपने हुनर से जनजातीय क्षेत्रों और वहां की महिलाओं के लिए कार्य कर रही हैं। 200 से ज्यादा आदिवासी महिलाओं और बच्चों को बैगा चित्रकला का प्रशिक्षण देकर उनके जीवन यापन में मदद कर रहीं हैं। राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर की चित्रकारी प्रदर्शनी में उनकी चित्रकारी का प्रदर्शन होता है। उन्हें नारी शक्ति पुरस्कार के अलावा महिला और बाल विकास मंत्रालय की ओर से भी सम्मानित किया गया है। ●

असंगठित क्षेत्र के कामगारों का भविष्य सुरक्षित

सशक्त, खुशहाल और आत्मनिर्भर भारत के सपनों को पूरा करने में श्रमिकों का सशक्तीकरण जरूरी है। आजादी के 75 वर्ष पूरे कर चुके भारत में 85 से 90% मजदूर असंगठित क्षेत्र में काम करते हैं जिन्हें पहले सामाजिक सुरक्षा सुविधाएं प्राप्त नहीं थी। पहली बार किसी सरकार ने श्रमिकों की सुध ली और 29 श्रम कानूनों को 4 श्रम कोड में शामिल कर सरल बनाने से पहले 5 मार्च, 2019 को असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों के लिए वृद्धावस्था में आर्थिक सुरक्षा देने वाली प्रधानमंत्री श्रमयोगी मान-धन योजना शुरू की। चार वर्षों में योजना की छतरी 49 लाख से अधिक श्रमिकों तक पहुंची...

आजादी के बाद इतिहास की यह पहली योजना है जिसने समाज के उस वर्ग को छुआ है, जिसके बारे में कभी सोचा ही नहीं गया। जिनको अपने ही भाग्य पर छोड़ दिया गया था। यह बीते वर्षों में शुरू की गई योजनाओं का विस्तार है। गरीब को, श्रमिक को, सस्ती स्वास्थ्य सेवा हो या फिर बीमा का सुरक्षा कवच, यह भी पहली बार हमारी सरकार ने ही सुनिश्चित किया है।

-नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

भारतीय श्रमिकों के कल्याण और उनका जीवन आसान करने के लिए कृतसंकल्पित राष्ट्र देश के श्रमिकों के साथ-साथ कुछ अन्य देशों में रह रहे भारतीय श्रमिकों के कल्याण के लिए काम कर रही है। असंगठित क्षेत्र के श्रमिक और कामगार देश की नींव हैं। इनकी चिंता पहले नहीं की गई लेकिन पिछले 9 वर्षों में न सिर्फ प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना और प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना से आकस्मिक निधन या निशक्तता की दशा में आर्थिक सहायता का प्रबंध किया गया बल्कि बुढ़ापे में आर्थिक सहारा देने के लिए प्रधानमंत्री श्रमयोगी मान-धन योजना शुरू की गई।

राष्ट्र के विकास में 'सत्यमेव जयते' के बराबर 'श्रमेव जयते' में ताकत मानने वाले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अगुवाई में शुरू प्रधानमंत्री श्रमयोगी मान-धन योजना में 13 फरवरी, 2023 तक 49.25 लाख लाभार्थियों ने पंजीकरण कराया है। आजादी के बाद यह पहला अवसर है जब इस प्रकार की योजना केंद्र सरकार ने शुरू की है। वहीं असंगठित श्रमिकों का राष्ट्रीय डाटा सरकार के पास हो इसलिए 26 अगस्त 2021 में ई-श्रम पोर्टल पर पंजीकरण शुरू किया गया। पोर्टल में 28.56 करोड़ से अधिक असंगठित कामगारों का आधार के साथ पंजीकरण हो चुका है जिसमें 52.80 प्रतिशत महिला कामगार हैं।

आवेदन ऐसे कर सकते हैं

- इस योजना के तहत 15 हजार रुपये या इससे कम मासिक आय के साथ ईपीएफओ, एनपीएस की सदस्यता नहीं रखने वाले असंगठित क्षेत्र के मजदूर जिनकी उम्र 18 से 40 साल के बीच है, आवेदन कर सकते हैं।
- आवेदन करने के लिए श्रमिक के पास मोबाइल फोन, आधार नंबर और बचत खाता होना चाहिए। पंजीकरण की सुविधा देश भर के 4 लाख से अधिक कॉमन सर्विस सेंटर में भी उपलब्ध है।
- ऑनलाइन आवेदन www.maandhan.in पर कर सकते हैं।
- अगर कोई 18 साल का है तो उसे हर महीने 55 रुपये निवेश करना होगा। 29 साल की उम्र के लोगों को हर महीने 100 रुपये और 40 साल की उम्र के लोगों को हर महीने 200 रुपये निवेश करने होंगे। प्रीमियम में 50 % अंशदान सरकार देती है।
- लाभार्थी की मृत्यु पेंशन के दौरान होती है तो उसके जीवनसाथी को 50% धनराशि पेंशन के रूप में दी जाएगी।

श्रमिक और कामगारों के कल्याण की यह भी योजनाएं

- प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना में जीवन बीमा कवर होता है। बैंक या डाकघर के खाता धारक और ऑटो डेबिट की सहमति देने वालों को 436 रुपये के वार्षिक प्रीमियम पर 2 लाख रुपये की कवरेज 18-50 वर्ष के आयु वर्ग को दिया जाता है।
- प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना में दुर्घटना के कारण जीवन और निशक्तता को कवर किया जाता है। इसमें 18 से 70 वर्ष के आयु वर्ग वाले व्यक्ति को बैंक या डाकघर में खाता होने और ऑटो डेबिट 20 रुपये की सहमति दिए जाने पर मृत्यु व पूर्ण स्थायी निशक्तता के मामले में 2 लाख और आंशिक स्थायी निशक्तता के मामले में 1 लाख रुपये की कवरेज दी जाती है।
- आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना में 27 स्पेशियलिटी में 1949 प्रक्रियाओं में भर्ती किए जाने के लिए पात्र परिवार को 5 लाख रुपये का वार्षिक स्वास्थ्य कवरेज दिया जाता है।

राष्ट्र निर्माण के आधार बनने वाले असंगठित क्षेत्र के निर्माण मजदूर, सब्जी विक्रेता, सफाई कर्मचारी, सुरक्षा गार्ड, मिट्टी का बर्तन बनाने वाले, घरेलू कामगार, रेहड़ी पटरी वाले सहित अन्य असंगठित मजदूरों के बुढ़ापे में आर्थिक जरूरतें पूरी करने के लिए केंद्र सरकार ने मामूली अंशदान के साथ पेंशन का इंतजाम कर दिया है ताकि बुढ़ापे में शरीर काम न करे तो किसी के आगे हाथ न फैलाना पड़े। प्रधानमंत्री श्रमयोगी मान-धन योजना में असंगठित कामगारों को 60 वर्ष की आयु के बाद 3,000 रुपये मासिक पेंशन मिलेगी। इसके लिए कॉमन सर्विस सेंटर पर जाकर आधार कार्ड और पासबुक दिखाकर बायो-मेट्रिक पंजीकरण कराना होता है। पंजीकरण ऑनलाइन खुद भी कर सकते हैं। खाते से मासिक 50% अंशदान का ऑटो डेबिट की अनुमति देनी होती है। यह केंद्र सरकार की एक ऐसी पहल है जिससे कमजोर आर्थिक स्थिति वाले लोगों के बीच विश्वास पैदा हुआ है और लोगों का भविष्य सुरक्षित हुआ है। प्रधानमंत्री श्रमयोगी मान-धन योजना असंगठित क्षेत्र के लोगों के लिए वरदान साबित हो रही है। इस योजना का उद्देश्य असंगठित क्षेत्र के मजदूरों और देश के वरिष्ठ नागरिकों को सशक्त और आत्मनिर्भर बनाना है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने योजना की शुरुआत के समय न सिर्फ असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों से पंजीकरण कराने की अपील की थी बल्कि आमजन से भी आग्रह किया था कि इस वर्ग के श्रमिकों को जानते हैं तो पंजीकरण में मदद करें। असंगठित क्षेत्रों के श्रमिक जैसे-ड्राइवर, रिक्शा चालक, मोची, दर्जी, मजदूर घरों में काम करने वाले, ईंट भट्टा पर काम करने वाले मजदूर आदि इस योजना का लाभ उठा सकते हैं।●

छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस से देश में पहली बार एक साथ दो वंदे भारत ट्रेन को हरी झंडी

"वंदे भारत ट्रेन आधुनिक भारत की भव्य तस्वीर"

वंदे भारत ट्रेन, आज के आधुनिक होते हुए भारत की बहुत ही शानदार तस्वीर है। यह भारत की स्पीड, भारत की स्केल, दोनों का प्रतिबिंब है। आज देश में बहुत तेजी से वंदे भारत ट्रेन की संख्या बढ़ रही है और अभी तक 10 ऐसी वंदे भारत ट्रेन देश भर में चलनी शुरू हो चुकी है। इस समय देश के 17 राज्यों के 108 जिले वंदे भारत एक्सप्रेस से कनेक्ट हो चुके हैं। इसी कड़ी में राष्ट्र को सौगात देते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 10 फरवरी को मुंबई के छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस में मुंबई-सोलापुर वंदे भारत और मुंबई-साईंनगर शिरडी वंदे भारत को झंडी दिखाकर किया रवाना...

एक जमाना था जब सांसद, प्रधानमंत्री को चिट्ठी लिखा करते थे कि हमारे क्षेत्रों में स्टेशन पर ट्रेन को रुकने का कोई प्रबंध कीजिए। एक-दो मिनट का स्टॉपेज दे दीजिए। अब देश भर के सांसद जब भी प्रधानमंत्री से मिलते हैं तो यही मांग करते हैं कि हमारे यहां भी वंदे भारत ट्रेन चला दीजिए। आज वंदे भारत ट्रेन का ऐसा क्रेज है। मुंबई में छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस से दो वंदे भारत ट्रेन को झंडी दिखाकर रवाना करने के अवसर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा, "आज का दिन भारतीय रेल के लिए विशेष रूप से मुंबई और महाराष्ट्र की आधुनिक कनेक्टिविटी के लिए बहुत बड़ा है। आज पहली बार एक साथ दो वंदे भारत ट्रेन शुरू हुई हैं। यह वंदे भारत ट्रेन, मुंबई और

सांताक्रूज चेंबूर लिंक रोड और कुरार अंडरपास राष्ट्र को समर्पित

- मुंबई में सड़क यातायात की भीड़ को कम करने और वाहनों की आवाजाही को सुव्यवस्थित करने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दो सड़क परियोजनाओं- सांताक्रूज चेंबूर लिंक रोड और कुरार अंडरपास परियोजना को भी राष्ट्र को समर्पित किया।
- कुर्ला से वकोला तक और कुर्ला में एमटीएनएल जंक्शन, बीकेसी से एलबीएस फ्लाईओवर तक जाने वाला यह नवनिर्मित एलिवेटेड कॉरिडोर शहर में पूर्व-पश्चिम कनेक्टिविटी को उन्नत करेगा।
- यह सड़क वेस्टर्न एक्सप्रेस हाईवे को ईस्टर्न एक्सप्रेस हाईवे से जोड़ेगी जिससे पूर्वी और पश्चिमी उपनगर कारगर तरीके से आपस में जुड़ेंगे।
- वेस्टर्न एक्सप्रेस हाईवे (डब्ल्यूईएच) पर यातायात को आसान बनाने की दृष्टि से कुरार अंडरपास बेहद महत्वपूर्ण है, जोकि डब्ल्यूईएच के मलाड और कुरार की ओर वाले हिस्से को जोड़ता है। यह लोगों को आसानी से सड़क पार करने और साथ ही वाहनों को डब्ल्यूईएच पर भारी ट्रैफिक में फंसे बिना चलने की सुविधा देता है।

वंदे भारत ट्रेन के नौ और दस का दम

- मुंबई-सोलापुर वंदे भारत ट्रेन देश की नौवीं वंदे भारत ट्रेन होगी। यह नई विश्वस्तरीय ट्रेन मुंबई और सोलापुर के बीच कनेक्टिविटी को बेहतर करेगी। साथ ही सोलापुर में सिद्धेश्वर, सोलापुर के निकट अक्कलकोट, तुलजापुर, पंढरपुर और पुणे के निकट आलंदी जैसे महत्वपूर्ण तीर्थस्थलों की यात्रा को भी सुविधाजनक बनाएगी।
- मुंबई-साईनगर शिरडी वंदे भारत, देश की दसवीं वंदे भारत ट्रेन है। महाराष्ट्र के नासिक, त्र्यंबकेश्वर, साईनगर शिरडी और शनि सिंगनापुर जैसे महत्वपूर्ण तीर्थस्थलों के साथ कनेक्टिविटी को बेहतर करेगी।

पुणे जैसे देश के आर्थिक सेंटर्स को हमारे आस्था के बड़े केंद्रों से जोड़ेंगी। इससे कॉलेज आने-जाने वाले, ऑफिस और बिजनेस के लिए आने-जाने वाले, किसानों और श्रद्धालुओं, सभी को सुविधा होगी। यह महाराष्ट्र में पर्यटन और तीर्थ यात्रा को बहुत अधिक बढ़ावा देने वाली हैं।"

यह ट्रेन प्रधानमंत्री मोदी के सपने को साकार करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है जो यात्रियों के लिए बेहतर और जरूरतों के अनुकूल परिवहन के बुनियादी ढांचे का निर्माण करती है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा, "इंफ्रास्ट्रक्चर पर निवेश किया गया हर रुपया नए रोजगार की संभावनाएं बनाता है। इसमें जो सीमेंट लगता है, बालू लगता है, लोहा लगता है, निर्माण में मशीनें लगती हैं, इनसे जुड़ी हर इंडस्ट्री को बल मिलता है। इससे बिजनेस करने वाले मिडिल क्लास को भी लाभ होता है, गरीब को रोजगार मिलता है। इससे इंजीनियरों को रोजगार मिलता है, श्रमिकों को रोजगार मिलता है। यानि इंफ्रास्ट्रक्चर जब बनता है, तब भी सबकी कमाई होती है और जब तैयार होता है तो वह नए उद्योगों, नए बिजनेस के रास्ते खोलता है।"

जितनी तेजी से हमारा पब्लिक ट्रांसपोर्ट सिस्टम आधुनिक बनेगा, उतना ही देश के नागरिकों के जीवन की गुणवत्ता में सुखद सुधार होगा। इसी सोच के साथ आज देश में आधुनिक ट्रेनें चलाई जा रही हैं, मेट्रो का विस्तार हो रहा है, नए-नए एयरपोर्ट्स और पोर्ट्स बनाए जा रहे हैं।

छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस के प्लेटफार्म नं. 18 पर आने के बाद प्रधानमंत्री मोदी ने मुंबई-साईंनगर शिरडी वंदे भारत का निरीक्षण किया और ट्रेन के चालक दल एवं कोच के अंदर बैठे बच्चों से बातचीत भी की। ●

उत्तर प्रदेश वैश्विक निवेशक शिखर सम्मेलन 2023

स्पीड और स्केल की राह पर आगे बढ़ता भारत

उत्तर प्रदेश की धरती अपने सांस्कृतिक वैभव, गौरवशाली इतिहास और समृद्ध विरासत के लिए जानी जाती है। इतना सामर्थ्य होने के बावजूद, उत्तर प्रदेश के साथ कुछ बातें जुड़ गई थीं। उसी उत्तर प्रदेश में आज बिजली से लेकर कनेक्टिविटी तक हर क्षेत्र में सुधार आया है और बहुत जल्द यह देश के उस इकलौते राज्य के तौर पर भी जाना जाएगा, जहां 5 इंटरनेशनल एयरपोर्ट्स होंगे। इंफ्रास्ट्रक्चर के साथ-साथ उत्तर प्रदेश में सरकारी सोच और अप्रोच में इज ऑफ डूइंग बिजनेस के लिए सार्थक बदलाव आया है। सार्थक बदलाव लाने वाले इसी राज्य की राजधानी लखनऊ में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 10 फरवरी को वैश्विक निवेशक शिखर सम्मेलन 2023 का किया उद्घाटन...

उत्तर प्रदेश ने 5-6 साल में एक नई पहचान बनाई है। अब उत्तर प्रदेश यानि यूपी की पहचान सुशासन, बेहतर कानून-व्यवस्था, शांति और स्थिरता के लिए है। यहां अब धन कमाने के लिए नित्य नए अवसर बन रहे हैं और बीते कुछ वर्षों में आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर के लिए उत्तर प्रदेश ने जो पहल की है, उसके परिणाम नजर आ रहे हैं। लखनऊ में उत्तर प्रदेश वैश्विक निवेशक शिखर सम्मेलन 2023 का उद्घाटन करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा, "आज यूपी एक आशा, एक उम्मीद बन चुका है। भारत अगर आज दुनिया के लिए उज्ज्वल देश है, तो यूपी भारत की ग्रोथ को दिशा प्रदान करने वाला एक अहम नेतृत्व दे रहा है।" आज भारत में सोशल, फिजिकल और डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर पर जो काम हुआ है, उसका बड़ा लाभ यूपी को भी मिला है। एक मार्केट के रुप में भारत अब सीमलेस हो रहा है, सरकारी प्रक्रियाएं भी सरल हो रही हैं। आज भारत सही मायने में स्पीड और स्केल के रास्ते पर चल पड़ा है। एक बहुत बड़े वर्ग की बेसिक जरूरतों को हमने पूरा

इंडियन एसोसिएशन ऑफ फिजियोथेरेपिस्ट का 60वां वार्षिक सम्मेलन

फिट भी और सुपरहिट भी होगा भारत

इधर अहमदाबाद में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 11 फरवरी को इंडियन एसोसिएशन ऑफ फिजियोथेरेपिस्ट (आईएपी) के 60वें राष्ट्रीय सम्मेलन को संबोधित किया। इस अवसर पर अपने संबोधन में, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने फिजियोथेरेपिस्ट के महत्व को सांत्वना, आशा, सौम्यता और पुनः स्वास्थ्य लाभ के प्रतीक के रूप में स्वीकार किया। उन्होंने कहा कि एक फिजियोथेरेपिस्ट न केवल शारीरिक चोट का इलाज करता है बल्कि रोगी को मनोवैज्ञानिक चुनौती से निपटने का साहस भी देता है। कहा जाता है कि सबसे अच्छा फिजियोथेरेपिस्ट वही होता है, जिसकी जरूरत मरीज को बार-बार महसूस ना हो। यानि एक तरह से कहें तो फिजियोथेरेपिस्ट पेशा ही उनको आत्मनिर्भरता का महत्त्व सिखाता है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कार्यक्रम में कहा, "मुझे भी कभी-कभी फिजियोथेरेपिस्ट की सेवा लेनी पड़ती है इसलिए मैं अपने अनुभव के बाद, आप सभी से एक और बात कहना चाहता हूं। मेरा अनुभव है कि जब फिजियोथेरेपिस्ट के साथ योग की एक्सपर्टीज जुड़ जाती है तो उसकी शक्ति कई गुना बढ़ जाती है। शरीर की जो कॉमन प्रॉबलम्स हैं, जिनमें अक्सर फिजियोथेरेपी की जरूरत पड़ती है। उसका समाधान, कई बार योग और आसानों में भी होता है। इसलिए आपको फिजियोथेरेपी के साथ-साथ योग भी आता होगा तो आपकी प्रोफेशनल पावर बढ़ जाएगी।" प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने यहां कहा कि उन्हें पूरा विश्वास है कि आप जैसे विशेषज्ञों के नेतृत्व में, भारत फिट भी होगा और सुपर हिट भी होगा।

उत्तर प्रदेश सरकार का प्रमुख कार्यक्रम है वैश्विक निवेशक शिखर सम्मेलन

- 10-12 फरवरी 2023 तक निर्धारित, उत्तर प्रदेश वैश्विक निवेशक शिखर सम्मेलन 2023, उत्तर प्रदेश सरकार का प्रमुख निवेश शिखर सम्मेलन है।
- यह नीति निर्माताओं, उद्योग जगत के प्रतिनिधियों, शिक्षाविदों, थिंक-टैंक और दुनिया भर के नेताओं को एक मंच पर लाता है जहां वह सामूहिक रूप से व्यापार के अवसरों का पता लगाने और साझेदारी बनाने पर विचार करते हैं।
- इन्वेस्ट यूपी 2.0 उत्तर प्रदेश में एक व्यापक, निवेशक-केंद्रित और सेवा-उन्मुख निवेश इकोसिस्टम है जो निवेशकों को प्रासंगिक, सुपरिभाषित, मानक सेवाएं प्रदान करने का प्रयास करता है।

कर लिया है, इसलिए वह एक लेवल ऊपर की सोचने लगा है, आगे की सोचने लगा है। यही भारत पर भरोसे का सबसे बड़ा कारण है।

कार्यक्रम के दौरान, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ग्लोबल ट्रेड शो का भी उद्घाटन किया और इन्वेस्ट यूपी 2.0 लॉन्च किया। उन्होंने प्रदर्शनी का भी अवलोकन किया। प्रधानमंत्री मोदी ने देश की स्टार्टअप क्रांति में राज्य की बढ़ती भूमिका पर बात की और कहा कि यूपी सरकार ने आने वाले वर्षों में 100 इनक्यूबेटर और तीन अत्याधुनिक केंद्र स्थापित करने का लक्ष्य रखा है जो प्रतिभाशाली और कुशल युवाओं का एक बड़ा वर्ग तैयार करेंगे।

खेलो इंडिया और खेल महाकुंभ से

तराशे जा रहे भविष्य के ओलंपिक खिलाड़ी

देश में, खास कर ग्रामीण इलाकों में खेल प्रतिभाओं की कमी नहीं है लेकिन संसाधनों और सरकारी मदद के अभाव में प्रतिभा सामने नहीं आ पाती थी इससे न सिर्फ युवा बल्कि देश का भी नुकसान हो रहा था। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश ने युवाओं की शक्ति को पहचाना और वर्ष 2014 से अब तक खेल के बजट में तीन गुना की बढ़ोतरी की गई, ताकि शारीरिक और मानसिक विकास के साथ-साथ अंतरराष्ट्रीय स्तर की प्रतिस्पर्धाओं के लिए खिलाड़ियों को तैयार किया जा सके। इसी कड़ी में खेलो इंडिया के साथ-साथ स्थानीय स्तर पर प्रतिभा निखारने के लिए सांसद खेल महाकुंभ जैसे कार्यक्रमों का किया जा रहा आयोजन...

भारत के युवाओं में खेल के प्रति जुनून और प्रतिभा दोनों है लेकिन संसाधनों के अभाव और सरकार से समर्थन की कमी के कारण बाधाएं रहती थी। अब एथलीटों के सामने आने वाली इन समस्याओं का समाधान किया जा रहा है। केंद्र सरकार की ओर से आज देश में खेल विश्वविद्यालय स्थापित हो रहे हैं और खेल महाकुंभ जैसे बड़े कार्यक्रम भी पेशेवर तरीके से आयोजित किये जा रहे हैं। खेल प्रबंधन और खेल प्रौद्योगिकी से संबंधित प्रत्येक विषय को सीखने के लिए एक ऐसा वातावरण बनाने की आवश्यकता पर बल दिया जा रहा है जिससे युवाओं को इन क्षेत्रों में अपना करियर बनाने का अवसर मिले। प्रधानमंत्री मोदी कहते हैं, "हमारी सरकार इस बात पर ध्यान दे रही है कि पैसे की कमी के कारण कोई भी युवा पीछे न छूटे।" केंद्र सरकार अब सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों को सालाना 5 लाख रुपये तक का समर्थन कर रही है। प्रमुख खेल पुरस्कारों में दी जाने वाली राशि को भी बढ़ाकर तीन गुना कर दिया गया है।

खेलों को बढ़ावा और युवाओं को उत्साहित करने के लिए

ओलंपिक जैसी बड़ी वैश्विक प्रतियोगिताओं में भी सरकार पूरी शक्ति से अपने खिलाड़ियों के साथ खड़ी रहती है। TOPS जैसी स्कीम के जरिए वर्षों पहले से खिलाड़ी ओलंपिक की तैयारी कर रहे हैं। केंद्र सरकार अब जिला स्तर और स्थानीय स्तर तक स्पोर्ट्स फैसिलिटीज बना रही है। अब तक देश के सैकड़ों जिलों में लाखों युवाओं के लिए स्पोर्ट्स इंफ्रास्ट्रक्चर तैयार किया गया है।

– नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

- वर्ष-2023 में जयपुर खेल महाकुंभ में 600 से अधिक टीमों ने हिस्सा लिया।
- जयपुर खेल महाकुंभ में 6500 खिलाड़ियों ने भाग लिया। इसमें 125 से अधिक महिला टीम शामिल हुई।
- जयपुर खेल महाकुंभ का आयोजन युवा दिवस यानी 12 जनवरी-2023 को शुरू हुआ।
- खेल महाकुंभ में जयपुर ग्रामीण लोकसभा क्षेत्र के 450 से अधिक ग्राम पंचायतों, नगर पालिकाओं तथा सभी 8 विधानसभा क्षेत्रों के वार्डों से युवा और खिलाड़ी शामिल हुए।

वर्ष-2014 से पहले खेल मंत्रालय का बजट करीब 850 करोड़ था जो इस वर्ष **2,500** करोड़ रुपये है।

खेलो इंडिया अभियान के लिए **1,000** करोड़ रुपये से अधिक आवंटित किए गए हैं।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 5 फरवरी को जयपुर महाकुंभ प्रतियोगिता में शामिल हुए और कबड्डी मैच भी देखा। महाकुंभ आयोजन में प्रधानमंत्री मोदी शामिल हुए। उनके उत्साहवर्धक संदेश से खिलाड़ी उत्साहित हुए और आयोजकों को भी ताकत मिली। इससे देश के लिए बेहतरीन खिलाड़ी तैयार करने के साथ-साथ अंतरराष्ट्रीय स्तर पर देश को खेल के क्षेत्र में आगे बढ़ाने में मदद मिलेगी। जयपुर खेल महाकुंभ का आयोजन वर्ष-2017 से किया जा रहा है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने यहां एक जनसभा के संबोधन में कहा, "खिलाड़ी खेल के मैदान में केवल भाग लेने नहीं बल्कि जीतने और सीखने के लिए आए हैं। जीत तभी सुनिश्चित होती है, जब उसमें सीखने की लगन शामिल होती है। कोई भी खिलाड़ी खेल के मैदान से खाली हाथ नहीं जाता।" इन दिनों पूरे देश में खेल प्रतिस्पर्धाओं और खेल महाकुंभों की श्रृंखला आयोजित की जा रही है और यह पहल व्यापक स्तर पर हो रहे परिवर्तनों को दर्शाती है। प्रधानमंत्री मोदी ने युवाओं से कहा कि इतिहास में इस बात के प्रमाण हैं कि इस भूमि के बच्चों ने अपने पराक्रम से युद्ध के मैदान को खेल के मैदान में बदल दिया है। जब देश की सुरक्षा की बात आती है तो राजस्थान के युवा हमेशा दूसरों से आगे रहते हैं।

राजस्थान के कई एथलीट का जिक्र करते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि जयपुर के लोगों ने तो एक ओलंपिक पदक विजेता को अपने सांसद के रूप में चुना है। वहीं सांसद राज्यवर्धन सिंह राठौर खेल प्रतिस्पर्धाओं के रूप में योगदान देकर युवा पीढ़ी को खेल के मैदान में वापस ला रहे हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने फिटनेस में आहार और पोषण की भूमिका के संबंध में कहा कि "आप फिट होंगे, तभी आप सुपरहिट होंगे।" प्रधानमंत्री की ओर से यहां पर संयुक्त राष्ट्र द्वारा वर्ष 2023 को पोषक अनाज वर्ष के रूप में मनाने की जानकारी दी और कहा कि श्री अन्न को न केवल अपने आहार में शामिल करें बल्कि उनसे ब्रांड एंबेसडर बनने की भी अपील की।

सरकार का मानना है कि खेल केवल एक शैली नहीं है, बल्कि एक उद्योग है, क्योंकि खेल से संबंधित चीजें और संसाधन बना रहे एमएसएमई के माध्यम से बड़ी संख्या में लोगों को रोजगार मिल रहा है। उन्होंने खेल क्षेत्र से जुड़े एमएसएमई को मजबूत करने के लिए बजट में की गई कई महत्वपूर्ण घोषणाओं की जानकारी दी। पीएम विश्वकर्मा कौशल सम्मान यानी पीएम विकास योजना का उदाहरण दिया और कहा कि यह योजना शारीरिक कौशल और हाथ के औजारों से काम करने वाले लोगों के लिए बहुत मददगार साबित होगी। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि जब पूरे मन से प्रयास किए जाते हैं, तो परिणाम सुनिश्चित होते हैं। उन्होंने कहा कि जयपुर महाकुंभ के दौरान किए गए प्रयासों के भविष्य में शानदार परिणाम मिलेंगे। प्रधानमंत्री ने निष्कर्ष के तौर पर कहा, "देश के लिए अगला स्वर्ण और रजत पदक विजेता आपके बीच से निकलेगा। अगर आप निश्चय कर लेंगे, तो ओलंपिक में भी तिरंगे की शान बढ़ा पायेंगे।"

मुंबई में अल्जामिया-तुस-सैफियाह के नए परिसर का उद्घाटन

भारतीय कलेवर में ढली आधुनिक शिक्षा व्यवस्था देश की प्राथमिकता

एक देश के रूप में भारत के लिए विकास भी महत्वपूर्ण है और विरासत भी महत्वपूर्ण है। यही भारत में हर पंथ, समुदाय और विचारधारा की विशेषता भी रही है। इसलिए आज देश परंपरा और आधुनिकता के संगम की तरह विकास के रास्ते पर आगे बढ़ रहा है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति जैसे सुधारों के साथ अमृत काल के संकल्पों को देश आगे बढ़ा रहा है। इसी संकल्प की दिशा में आगे बढ़ते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 10 फरवरी को मुंबई में अल्जामिया-तुस-सैफियाह के नए परिसर का उद्घाटन किया जो दाऊदी बोहरा समुदाय का है प्रमुख शैक्षणिक संस्थान...

महात्मा गांधी कहते थे कि शिक्षा हमारे आसपास की परिस्थितियों के अनुकूल होनी चाहिए तभी उसकी सार्थकता बनी रह सकती है। ऐसे में सरकार ने देश की शिक्षा व्यवस्था में एक और अहम बदलाव किया है। यह बदलाव है- एजुकेशन सिस्टम में स्थानीय भाषा को महत्व देना। महाराष्ट्र के मुंबई स्थित मरोल में अल्जामिया-तुस-सैफियाह के नए परिसर के उद्घाटन के अवसर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा, "गुलामी के समय

> "दाऊदी बोहरा समुदाय और मेरा रिश्ता कितना पुराना है, शायद ही कोई ऐसा होगा जिसको पता न हो। मैं दुनिया में कहीं पर भी गया, वो प्यार एक प्रकार से बरसता रहता है।
>
> - नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

रिकार्ड संख्या में खुले विश्वविद्यालय

- पिछले 8 वर्षों में रिकॉर्ड संख्या में विश्वविद्यालय खुली हैं। मेडिकल एजुकेशन जैसी फील्ड में युवाओं का रुझान भी है और देश की जरूरत भी। इसे देखते हुए हर जिले में मेडिकल कॉलेज खोले जा रहे हैं।
- 2004 से 2014 के बीच देश में 145 मेडिकल कॉलेज शुरू हुए जबकि 2014 से 2022 के बीच 260 से ज्यादा मेडिकल कॉलेज खोले गए हैं।

गुजरात में जल संरक्षण के लिए जी-जान से लगा है बोहरा समाज

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बताया कि गुजरात में रहते हुए हमने एक दूसरे को बहुत करीब से देखा है। कई रचनात्मक प्रयासों को साथ मिलकर आगे भी बढ़ाया है। मुझे याद है कि हम सैयदना साहब की शताब्दी का वर्ष मना रहे थे। सूरत में हमारा बहुत बड़ा जलसा था और मैं भी था। उसमें सैयदना साहब ने मुझसे कहा मुझे बताओ मैं क्या काम करूं। मैंने कहा मैं कौन होता हूं आपको काम बताने वाला। उनका बड़ा आग्रह था तो मैंने कहा देखिए गुजरात में हमेशा पानी का संकट रहता है। आप उसमें कुछ जरूर कर सकते हैं। मैं आज भी कहता हूं कि उस एक बात को इतने साल हो गए, पानी रक्षा के काम में आज भी बोहरा समाज के लोग जी-जान से लगे हुए हैं।

अंग्रेजों ने इंग्लिश को ही शिक्षा का एक पैमाना बना दिया था। इसका सबसे बड़ा नुकसान गरीब बच्चों, दलितों, पिछड़ों और कमजोर वर्ग को हुआ। प्रतिभा होने के बाद भी उन्हें केवल भाषा के आधार पर प्रतियोगिता से बाहर कर दिया जाता था, लेकिन अब, मेडिकल और इंजीनियरिंग जैसी पढ़ाई भी स्थानीय भाषाओं में की जा सकेगी। अब युवाओं को किताबी ज्ञान के साथ ही स्किल, टेक्नोलॉजी और इनोवेशन के लिए तैयार किया जा रहा है। इससे हमारे युवा रियल वर्ल्ड की प्रॉब्लम्स के लिए तैयार हो रहे हैं, उनके सॉल्यूशंस खोज रहे हैं।" शिक्षा के क्षेत्र में भारत कभी नालंदा और तक्षशिला जैसे विश्वविद्यालयों का केंद्र हुआ करता था। पूरी दुनिया से लोग यहां पढ़ने और सीखने आते थे। अगर हमें भारत के वैभव को वापस लाना है, तो शिक्षा के उस गौरव को भी वापस लाना होगा। इसीलिए, आज भारतीय कलेवर में ढली आधुनिक शिक्षा व्यवस्था देश की प्राथमिकता है।

कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा, "कोई समुदाय, कोई समाज या संगठन, उसकी पहचान इस बात से होती है कि वह समय के अनुसार अपनी प्रासंगिकता को कितना कायम रखता है। समय के साथ परिवर्तन और विकास की इस कसौटी पर दाऊदी बोहरा समुदाय ने हमेशा खुद को खरा साबित किया है। आज अल्जामिया-तुस-सैफियाह जैसे शिक्षण संस्थान के महत्वपूर्ण केंद्र का विस्तार इसका एक जीता-जागता उदाहरण है। मैं संस्था से जुड़े हर व्यक्ति को मुंबई शाखा शुरू होने की और 150 साल पुराना सपना साकार होने पर बहुत-बहुत बधाई देता हूं।" महिलाओं और बेटियों को आधुनिक शिक्षा के नए अवसर मिल रहे हैं। इसी मिशन के साथ अल्जामिया-तुस- सैफियाह भी आगे बढ़ रहा है। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि आपका पाठयक्रम भी आधुनिक शिक्षा के हिसाब से अपग्रेड रहता है और आपकी सोच भी पूरी तरह से अपडेट रहती है। विशेषकर, महिलाओं की शिक्षा को लेकर इस संस्था के योगदान ने सामाजिक बदलाव को एक नई ऊर्जा दी है। अल्जामिया-तुस-सैफियाह (सैफी अकादमी) संस्थान सीखने की परंपराओं और साहित्यिक संस्कृति की रक्षा के लिए काम कर रहा है। ●

बनने लगा जन-जन का जी-20

उत्पाद, संस्कृति, पर्यटन को मिल रही मजबूती

अंतरराष्ट्रीय आर्थिक सहयोग वाले प्रमुख वैश्विक मंच जी-20 की अध्यक्षता कर रहे भारत ने हर स्तर पर इस मंच के माध्यम से भारतीय उत्पाद, संस्कृति, पर्यटन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से देश भर में 200 से अधिक बैठकों की श्रृंखला तैयार की है। बैठकों में महिला के नेतृत्व में विकास को मजबूती से आगे बढ़ाया जा रहा है तो अर्बन20, यूथ20, डिजिटल अर्थव्यवस्था, रोजगार और कृषि कार्य समूह लगातार चर्चा में जुटे हैं। जहां संबंधित राज्यों के एक जिला, एक उत्पाद सूची में से उपहार और किट दिए जा रहे हैं तो भारतीय व्यंजन, किले, गुफा, पर्यटन स्थल दे रहे हैं उत्पाद, संस्कृति और पर्यटन को बढ़ावा...

दिल्ली में 9 और 10 सितंबर, 2023 को होने वाले जी-20 के 18वें शिखर सम्मेलन की तैयारी के लिए 30 से अधिक अलग-अलग कार्य क्षेत्रों की बैठकों में अन्य विषयों के साथ-साथ वैश्विक आर्थिक चुनौतियों, जलवायु परिवर्तन और जारी वर्तमान संघर्षों के प्रभाव पर भी चर्चा की जा रही है। वहीं जिन शहरों में बैठकों का आयोजन हो रहा है वहां की सांस्कृतिक धरोहर, खानपान, पर्यटन स्थलों की भी सैर कराई जा रही है। आइए फरवरी के पहले पखवाड़े में आयोजित बैठकों के बारे में जानते हैं।

आगरा में हुई जी-20 सशक्तीकरण की पहली बैठक

जी-20 सशक्तीकरण की पहली बैठक आगरा में 11 और 12 फरवरी को आयोजित की गई जिसके उद्घाटन समारोह में महिला एवं बाल विकास मंत्री स्मृति जूबिन इरानी शामिल हुईं। महिलाओं के नेतृत्व वाले विकास को बढ़ावा देने वाली सामूहिक शक्ति को एक साथ लाने का माध्यम बनी इस बैठक में महिला उद्यमिताः समानता और अर्थव्यवस्था, दोनों के लिए जीत के अवसर, जमीनी स्तर सहित सभी स्तरों पर महिलाओं के नेतृत्व को बढ़ावा देने के लिए साझेदारी और शिक्षा- महिला सशक्तीकरण और कार्यबल में समान भागीदारी की कुंजी विषय पर फोकस रहा। इस दो दिवसीय बैठक का विषय- सभी क्षेत्रों में नेतृत्व करने के लिए महिलाओं को सशक्त बनाना था।

लखनऊ में डिजिटल अर्थव्यवस्था कार्यसमूह की पहली बैठक

लखनऊ में 13 से 15 फरवरी तक जी-20 की डिजिटल अर्थव्यवस्था कार्यसमूह की पहली बैठक आयोजित की गई। जी-20 के सदस्य देशों के साथ 8 अतिथि देशों ने भी इस चर्चा में हिस्सा लिया। बैठक में पहले दिन डिजिटल सार्वजनिक इंफ्रास्ट्रक्चर, एमएसएमई के लिए साइबर सुरक्षा समाधान, टिकाऊ विकास लक्ष्यों और भू-स्थानिक प्रौद्योगिकियों के उपयोग से संबंधित विभिन्न विषयों पर कार्यशाला आयोजित की गई, वहीं दूसरे दिन भारत के शेरपा अमिताभ कांत ने बैठक को संबोधित किया। प्रतिनिधियों ने दो प्राथमिकता वाले

“

यदि आप अपना भविष्य ठीक करना चाहते हैं, यदि आप भविष्य की जरूरतों के अनुरूप तैयार रहना चाहते हैं, तो सुनिश्चित करें कि महिलाएं विचार-विमर्श के केंद्र में हों और महिलाएं आपके निर्णयों के भी केंद्र में रहें।”

- स्मृति जूबिन इरानी, केंद्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्री।

क्षेत्रों-डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर और साइबर सुरक्षा पर विस्तार से चर्चा करने के बाद इन विषयों पर अगली बैठक में और अधिक विचार विमर्श करने का निर्णय लिया। बैठक में अंतिम दिन, डिजिटल कौशलता की प्राथमिकता पर केंद्रित रहा।

जोधपुर में पहले रोजगार कार्य समूह की बैठक

रोजगार कार्य समूह की पहली बैठक 2 से 4 फरवरी तक जोधपुर में आयोजित की गई। इस बैठक में तीन विषयों पर चर्चा की गई जिसमें पहला विषय, प्रत्येक देश में स्किल डिमांड और सप्लाई को लेकर वैश्विक कौशल अंतराल का समाधान करना, दूसरा गिग एंड प्लेटफॉर्म वर्कर्स को किस तरह सोशल सिक्योरिटी ज्यादा से ज्यादा पहुंचाना और तीसरा, सामाजिक सुरक्षा का सतत वित्तपोषण का मुद्दा रहा।

गुजरात के कच्छ के रण में हुई पर्यटन पर चर्चा

गुजरात के कच्छ के रण में 7 से 9 फरवरी तक पर्यटन कार्य समूह की पहली बैठक आयोजित की गई। जी-20 में पर्यटन के लिए 5 प्राथमिकता वाले क्षेत्र, पर्यटन क्षेत्र को हरित बनाना, डिजिटलीकरण की शक्ति का उपयोग करना, युवाओं को कौशल के साथ सशक्त बनाना, पर्यटन क्षेत्र के एमएसएमई/स्टार्टअप को बढ़ावा देना और पर्यटन गंतव्यों के रणनीतिक प्रबंधन पर पुनर्विचार पर विशेष जोर दिया गया। कच्छ के रण के प्रतिनिधियों को धोलावीरा ले जाया गया जो यूनेस्को की विश्व विरासत स्थल है। ढोरडो टेंट सिटी में प्रवास के दौरान, प्रतिनिधियों को व्हाइट रण में सूर्योदय के समय एक योग सत्र में भाग लेने का अवसर भी मिला।

अर्बन20 से मांगे स्पष्ट, सटीक और कार्रवाई योग्य सुझाव

अर्बन20 की बैठक 9 और 10 फरवरी को अहमदाबाद में हुई। इसमें 40 शहरों और पर्यवेक्षक शहरों के 200 से अधिक प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। बैठक में भारत के शेरपा अमिताभ कांत ने प्रतिनिधियों को एक ऐसी दुनिया का अग्रदूत बनने का आह्वान किया जो डी-ग्लोबलाइजिंग, डीकार्बोनाइजिंग और डिजिटलीकरण वाले शहरों पर केंद्रित हो। उन्होंने अर्बन20 सहभागिता समूह से स्पष्ट, सटीक और कार्रवाई योग्य सुझाव देने का आग्रह भी किया ताकि उस पर जी-20 नेताओं द्वारा विचार किया जा सके।

गुवाहाटी में 6 से 8 फरवरी तक यूथ20 की स्थापना बैठक

यूथ-20 समूह की प्रारंभिक बैठक 6 से 8 फरवरी तक गुवाहाटी में बेहतर कल के लिए युवाओं से विचार-विमर्श करने और यूथ20 के पांच पहचाने गए विषयों का एक एजेंडा तैयार करने के लिए आयोजित की गई। केंद्रीय युवा कार्यक्रम और खेल मंत्री अनुराग सिंह ठाकुर ने 7 फरवरी को आईआईटी गुवाहाटी में आयोजित कार्यक्रम के दौरान संवाद में कहा, यूथ20 समूह युवा केंद्रित प्रयासों की मिसाल बनेगा। इस समूह में 20 अगस्त, 2023 तक कुल 17 बैठकें आयोजित की जाएंगी। ●

जी-20 की इस पखवाड़े की प्रस्तावित बैठकें

- 1 और 2 मार्च को जी-20 सदस्यों के विदेश मंत्रियों की बैठक, दिल्ली।
- 1 से 4 मार्च तक, भ्रष्टाचार विरोधी कार्य समूह की पहली बैठक, गुरुग्राम।
- 6-7 मार्च, वित्तीय समावेशन के लिए वैश्विक भागीदारी पर दूसरी बैठक, हैदराबाद।
- 15 से 17 मार्च, शिक्षा कार्य समूह की दूसरी बैठक, अमृतसर।

केंद्रीय मंत्रिमडंल के फैसले

वाइब्रेंट होंगे सीमाई गांव, बनाई जाएगी 2 लाख सहकारिता समितियां

गांव और देश की सुरक्षा केंद्र सरकार की प्राथमिकताओं में हमेशा शामिल रहा है। केंद्र सरकार ने गांव और देश की सीमा की सुरक्षा के लिए पहले भी कई कदम उठाए हैं। इसी दिशा में कदम आगे बढ़ाते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अगुवाई में हुए केंद्रीय मंत्रिमंडल के फैसले में गांव के सर्वांगीण विकास और राष्ट्र की सुरक्षा से जुड़े अहम निर्णय लिए गए। मंत्रिमंडल ने जहां 'वाइब्रेंट विलेज प्रोग्राम' को 2025-26 तक के लिए, वहीं आईटीबीपी के 7 नई बटालियन के गठन करने के साथ कुछ अन्य महत्वपूर्ण फैसलों को दी मंजूरी...

फैसला - देश में सहकारिता आंदोलन को मजबूती प्रदान करने और इसकी पहुंच को जमीनी स्तर तक और व्यापक बनाने के लिए नई प्राथमिक कृषि ऋण समिति (पैक्स) की स्थापना को मंजूरी दी।

प्रभाव - शुरूआती लक्ष्य अगले 5 वर्षों में 2 लाख बहुउद्देशीय पैक्स, डेयरी, मत्स्य सहकारी समितियों की स्थापना की जाएगी। इन समितियों की स्थापना से ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर सृजित होंगे। पुनर्जीवित नहीं की जा सकने वाली प्राथमिक सहकारी समितियों को बंद करने के लिए चिन्हित किया जाएगा और उसी क्षेत्र में नई प्राथमिक सहकारी समितियों की स्थापना की जाएगी।

फैसला - केंद्रीय मंत्रिमंडल ने वित्त वर्ष 2022-23 से 2025-26 के लिए केंद्र प्रायोजित योजना- 'वाइब्रेंट विलेज प्रोग्राम' को मंजूरी दी। योजना के लिए वित्तीय आवंटन 4,800 करोड़ रुपये है।

प्रभाव - इससे उत्तरी भूमि सीमा के साथ 4 राज्यों और 1 केंद्रशासित प्रदेश में बुनियादी ढांचे के विकास और आजीविका के अवसरों को बढ़ावा मिलेगा। साथ ही, उत्तरी सीमा पर गांवों का समावेशी विकास होगा और लोगों के जीवन स्तर में सुधार होगा। यह निर्णय बेहतर सुरक्षा के साथ-साथ पलायन को रोकेगा। 4,800 करोड़ रुपये के वित्तीय आवंटन में से 2500 करोड़ रुपये का उपयोग सड़कों के निर्माण पर खर्च किया जाएगा। इस कार्यक्रम के पहले चरण में 663 गांव शामिल किए जाएंगे।

फैसला - हर मौसम में देश भर से लद्दाख का संपर्क बनाने के लिए शिंकू ला सुरंग के निर्माण को मंजूरी दी गई है।

प्रभाव - टनल की लंबाई 4.1 किलोमीटर होगी। इसका निर्माण दिसंबर 2025 तक पूरा हो जाएगा। इस पर 1681.51 करोड़ रुपये खर्च होंगे। इस परियोजना के क्रियान्वयन से लद्दाख को संस्कार वैली होते हुए देश के अन्य भागों से सभी मौसम में संपर्क की सुविधा होगी।

फैसला - जनवरी 2020 में आईटीबीपी के 47 नए बॉर्डर आउटपोस्ट और 12 स्टेजिंग कैंप की स्थापना को अनुमोदित किया गया था। इसे पूरा करने के लिए अतिरिक्त बल की आवश्यकता को देखते हुए मंत्रिमंडल ने 7 नई बटालियन शुरू करने की अनुमति दी है।

प्रभाव - इन सात नई बटालियन के लिए एक अतिरिक्त सेक्टर हेडक्वार्टर स्थापित किया जाएगा। इसकी स्थापना 2025-26 तक पूरी कर ली जाएगी। बटालियन और सेक्टर हेडक्वार्टर के लिए कुल 9,400 पदों का सृजन किया जाएगा। इससे आईटीबीटी में युवाओं के लिए रोजगार के अवसर बढ़ेंगे।

कृष्णगुरु एकनाम अखंड कीर्तन में प्रधानमंत्री का संबोधन

असम के गोमोशा का आकर्षण बढ़ने से रोजगार में हो रही बढ़ोतरी

पिछले कुछ वर्षों से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में जिस गति से लघु और सूक्ष्म उद्योगों को बढ़ावा दिया जा रहा है उससे न सिर्फ देश की आर्थिक व्यवस्था सुदृढ़ हो रही है बल्कि देश की महिलाओं को सशक्त और आत्मनिर्भर बनाने में बहुत मदद भी मिल रही है। असम में बनाए जा रहे गोमोशा का जिक्र करते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि इससे बड़ी संख्या में महिलाओं को रोजगार मिल रहा है। तीन फरवरी को प्रधानमंत्री मोदी ने असम में विश्व शांति के लिए आयोजित कृष्णगुरु एकनाम अखंड कीर्तन को किया संबोधित...

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा जब असम के शिल्प की बात होती है तब यहां के 'गोमोशा' का जिक्र अपने आप हो जाता है। प्रधानमंत्री मोदी ने अपना गोमोशा दिखाते हुए कहा कि मुझे खुद 'गोमोशा' पहनना बहुत अच्छा लगता है। उन्होंने कहा कि हर खूबसूरत गोमोशा के पीछे असम की महिलाओं की मेहनत होती है। बीते आठ से नौ वर्षों में देश में गोमोशा को लेकर आकर्षण बढ़ा है, इसकी मांग में भी बढ़ोतरी हुई है। इस मांग को पूरा करने के लिए बड़ी संख्या में महिला स्वयं सहायता समूह सामने आए हैं और इन समूहों में बड़ी संख्या में महिलाओं को रोजगार मिल रहा है। अब यह सहायता समूह आगे बढ़कर देश की अर्थव्यवस्था की ताकत बनेंगे। महिलाओं की आय उनके सशक्तीकरण का माध्यम बने इसके लिए इस बार के बजट में 'महिला सम्मान सेविंग सर्टिफिकेट' योजना की शुरुआत की गई है।

कृष्णगुरु एकनाम अखंड कीर्तन को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि मुझे खुशी है कि ज्ञान, सेवा और मानवता की जिस प्राचीन भारतीय परंपरा को कृष्णगुरु जी ने आगे बढ़ाया वो आज भी गतिमान है।

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि कृष्णगुरु जी ने विश्व शांति के लिए हर 12 वर्ष में एक माह के अखंड नामजप और कीर्तन का अनुष्ठान शुरू किया था। अपने देश में तो 12 वर्ष की अवधि पर इस तरह के आयोजनों की प्राचीन परंपरा रही है। इस तरह के आयोजन का मुख्य भाव रहा है व्यक्ति और समाज में कर्तव्य बोध को पुनर्जीवित करना। इस तरह के आयोजन में देश भर के लोग एक साथ एकत्रित होते हैं। पिछले 12 वर्षों में जो कुछ हुआ उसकी समीक्षा होती थी, वर्तमान परिस्थितियों का मूल्यांकन होता था और भविष्य की रूपरेखा तय की जाती थी। 12 वर्ष पर हो रहा कृष्णगुरु एकनाम अखंड कीर्तन भी ऐसी ही सशक्त परंपरा का सृजन कर रहा है। यह कीर्तन पूर्वोत्तर की विरासत और आध्यात्मिक चेतना से विश्व को परिचित करा रहा है। कृष्णगुरु जी की विलक्षण प्रतिभा और उनका आध्यात्मिक बोध उनसे जुड़ी हैरान कर देने वाली घटनाएं निरंतर प्रेरणा देती हैं। कृष्णगुरु जी ने सिखाया कि कोई काम, कोई भी व्यक्ति न तो छोटा होता है और न ही बड़ा होता है। बीते आठ-नौ वर्षों में देश ने इसी भावना से सबका साथ सबका विकास के लिए समर्पण भाव से कार्य किया है। आज विकास की दौड़ में जो जितना पीछे है देश के लिए वह प्राथमिकता में उतना ही ऊपर है। असम हो या उत्तर-पूर्व, दशकों तक विकास से वंचित रहा था। आज देश असम और उत्तर-पूर्वी राज्यों के विकास को वरीयता दे रहा है।

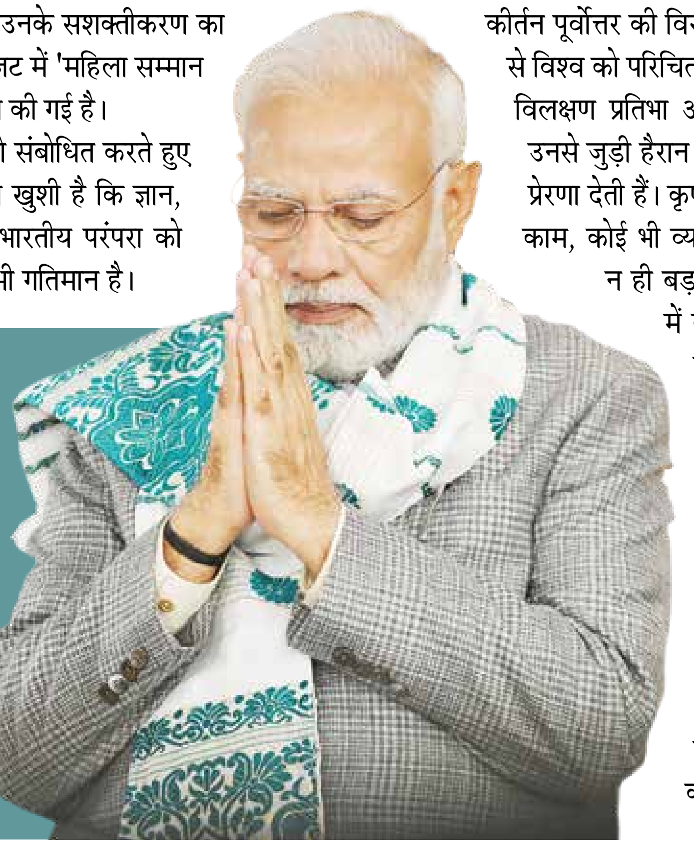

कृष्णगुरु जी ने सिखाया कि कोई काम, कोई भी व्यक्ति ना तो छोटा होता है और न ही बड़ा होता है। बीते आठ-नौ वर्षों में देश ने इसी भावना से सबका साथ, सबका विकास के लिए समर्पण भाव से कार्य किया है।

महर्षि दयानंद सरस्वती की 200वीं जयंती समारोह का उद्घाटन

विरासत और विकास की पटरी पर चल नई ऊंचाई छू रहा राष्ट्र

स्वामी दयानंद सरस्वती का आदर्श था- "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्"॥ अर्थात, हम पूरे विश्व को श्रेष्ठ बनाएं, हम पूरे विश्व में श्रेष्ठ विचारों और मानवीय आदर्शों का संचार करें। महर्षि ने जो मंत्र तब दिये थे और समाज के लिए सपने देखे थे, देश आज उस पर पूरे विश्वास के साथ आगे बढ़ रहा है। आज देश अत्यंत स्वाभिमान के साथ विरासत और विकास की पटरी पर नई ऊंचाइयों के लिए दौड़ रहा है। 'वेदों की ओर लौटे' का आवाहन करने वाले महापुरुष दयानंद सरस्वती की 200वीं जयंती के उपलक्ष्य में साल भर चलने वाले समारोह का प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 12 फरवरी को किया उद्घाटन...

सामाजिक असमानताओं से निपटने के लिए 1875 में आर्य समाज की स्थापना करने वाले समाज सुधारक स्वामी महर्षि दयानंद सरस्वती ने अनगिनत स्वतंत्रता सेनानियों के भीतर राष्ट्रप्रेम की लौ जलाई थी। कहते हैं एक बार एक अंग्रेज अफसर उनसे मिलने आया और उनसे कहा कि वह भारत में अंग्रेजी राज के सदैव बने रहने की प्रार्थना करें। उन्होंने आंख में आंख मिलाते हुए निर्भीक जवाब दिया था- "स्वाधीनता मेरी आत्मा और भारतवर्ष की आवाज है, यही मुझे प्रिय है। मैं विदेशी साम्राज्य के लिए कभी प्रार्थना नहीं कर सकता।" राष्ट्र प्रेम की ऐसी भावना रखने वाले महर्षि दयानंद सरस्वती की 200वीं जयंती समारोह का नई दिल्ली में उद्घाटन करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा, "महर्षि दयानंद की 200वीं जयंती का यह अवसर ऐतिहासिक है और भविष्य के इतिहास को निर्मित करने का अवसर भी है।" आज देश अपनी विरासत पर गर्व का आह्वान और देश में आधुनिकता लाने के साथ ही अपनी परंपराओं को भी समृद्ध कर रहा है। स्वामी दयानंद सरस्वती ने अपने जीवन में केवल एक मार्ग ही नहीं बनाया, बल्कि अनेक संस्थाओं का भी सृजन किया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा, "आजादी के अमृतकाल में आज देश उन सुधारों का साक्षी बन रहा है जो स्वामी दयानंद की भी प्राथमिकताओं में भी शामिल था। आज हम देश में बिना भेदभाव के नीतियों और प्रयासों को आगे बढ़ते देख रहे हैं। जो गरीब है, जो पिछड़ा और वंचित है, उसकी सेवा आज देश के लिए सबसे पहला यज्ञ है।" प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने स्मरणोत्सव के लिए एक लोगो भी जारी किया।

आर्य समाज ने सांस्कृतिक और सामाजिक जागृति में निभाई महत्वपूर्ण भूमिका

12 फरवरी 1824 को जन्मे महर्षि दयानंद सरस्वती एक समाज सुधारक थे। जिन्होंने 1875 में आर्य समाज की स्थापना की थी ताकि उस समय व्याप्त सामाजिक विषमताओं का मुकाबला किया जा सके। आर्य समाज ने सामाजिक सुधारों और शिक्षा पर जोर देकर देश की सांस्कृतिक और सामाजिक जागृति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। •

प्रधानमंत्री मोदी के संबोधन को सुनने के लिए QR कोड Scan करें

जिनकी देशभक्ति ने जन-जन को किया प्रेरित
राष्ट्र को दिखाई नई राह

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के नेतृत्व में 12 मार्च 1930 को शुरु हुए 'दांडी मार्च' को भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का अहम पड़ाव माना जाता है। अहमदाबाद के साबरमती आश्रम से नमक सत्याग्रह के लिए दांडी मार्च की शुरुआत की गई थी। इस मार्च के जरिए बापू ने अंग्रेजों के बनाए नमक कानून को तोड़कर उस सत्ता को चुनौती दी थी जिसके बारे में कहा जाता था कि उसके साम्राज्य में कभी सूरज नहीं डूबता। नमक सत्याग्रह के 91 वर्ष पूरे होने पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वर्ष 2021 में साबरमती आश्रम से अमृत महोत्सव की शुरुआत सांकेतिक पदयात्रा को हरी झंडी दिखा कर की थी। 15 अगस्त 2023 तक चलने वाले इस महोत्सव ने 2 साल में राष्ट्र को संकल्पों की सिद्धि के लिए किया प्रेरित...

आजादी का अमृत महोत्सव भारत के 75 वर्षों का अखिल भारतीय समारोह है। यह अभियान देश भर में अधिकतम जन भागीदारी के साथ सांस्कृतिक कार्यक्रम के माध्यम से चलाया जा रहा है। देश के इतिहास में ऐसे कई नायक-नायिकाएं हैं जिनकी देशभक्ति ने जन-जन को प्रेरित किया और राष्ट्र को नई राह दिखाई। आजादी के अमृत महोत्सव की श्रृंखला में इस बार पढ़िए जयरामदास दौलतराम, सहोदरन अय्यपन, अंबिका चक्रवर्ती और डॉ. बालकृष्ण शिवराम मुंजे की कहानी जिन्होंने अपनी कर्तव्यपरायणता और राष्ट्र के प्रति समर्पण से न केवल देश को नई ऊंचाई दी बल्कि उनके दिखाए रास्ते का सिरा पकड़ भारत आज नई कहानी लिख रहा है।

जयरामदास दौलतराम : नमक सत्याग्रह के दौरान जिन्हें अंग्रेजों की गोली लगी

जन्म : 21 जुलाई 1891, निधन : 1 मार्च 1979

सन 1942 में वह फिर गिरफ्तार हुए और तीन वर्ष के लिए नजरबंद रहे। जयरामदास दौलतराम का पत्रकारिता और पठन-पाठन से भी गहरा संबंध रहा।

प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी जयरामदास दौलतराम का जन्म 21 जुलाई 1891 को कराची में हुआ था जो अब पाकिस्तान में है। एक सिंधी परिवार में जन्मे जयरामदास दौलतराम का अकादमिक करियर भी शानदार रहा। उन्होंने कानून की डिग्री प्राप्त करने के बाद प्रैक्टिस शुरू की लेकिन जल्द ही इसे छोड़ दिया। वह एक बेहतरीन वक्ता भी माने जाते थे। विद्यार्थी जीवन में ही उनका संपर्क प्रसिद्ध नेताओं और गोपाल कृष्ण गोखले, लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, फिरोजशाह मेहता जैसे स्वतंत्रता सेनानियों से हो चुका था। 1915 में वह महात्मा गांधी के व्यक्तिगत संपर्क में आए और उनके अनुयायी बन गए। दौलतराम महात्मा गांधी के दर्शन से बहुत अधिक प्रभावित थे और अहिंसा एवं सत्याग्रह को हथियार बना स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करते थे। जयरामदास ने 1916 में एनी बेसेंट के होम रूल आंदोलन में भी भाग लिया। वो भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में शामिल हो गए और 1920 में असहयोग आंदोलन में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। 1928 में वह विदेशी वस्त्र बहिष्कार समिति के सचिव बने। जयरामदास नमक मार्च और भारत छोड़ो आंदोलन के एक प्रमुख कार्यकर्ता और मुख्य संगठनकर्ता थे। आंदोलन के दौरान भीड़ पर पुलिस की गोलीबारी में उनके पेट में भी गोली लग गई थी। महात्मा गांधी की गिरफ्तारी के बाद उन्हें भी गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया। सन 1942 में वह फिर गिरफ्तार हुए और तीन वर्ष के लिए नजरबंद रहे। जयरामदास दौलतराम का पत्रकारिता और पठन-पाठन से भी गहरा संबंध रहा। अपने जीवन काल में वह कई अखबारों से जुड़े रहे। वह इन अखबारों और पत्र-पत्रिकाओं में देशभक्तिपूर्ण लेख प्रकाशित करते थे। 1947 में विभाजन के दौरान जयरामदास ने भारत में रहने का फैसला किया और उन्हें बिहार का राज्यपाल नियुक्त किया गया।

बिहार के राज्यपाल पद से सेवानिवृत्त होने के बाद उन्होंने भारत के दूसरे कृषि मंत्री के रूप में पदभार संभाला। उन्होंने भारत की संविधान सभा में पंजाब के एक निर्वाचन क्षेत्र का प्रतिनिधित्व किया। 1950 से 1956 तक जयरामदास ने असम के राज्यपाल के रूप में भी काम किया। असम के तत्कालीन राज्यपाल रहते हुए जयरामदास दौलतराम ने 15 नवंबर 1953 को मेघालय की राजधानी शिलांग से 45 किलोमीटर की दूरी पर मैरांग शहर में स्थित यू तिरोत सिंह स्मारक की आधारशिला रखी थी।

सात शहीदों के सम्मान में बिहार विधानसभा परिसर के सामने चौराहे पर एक स्मारक का निर्माण किया गया है जिसकी आधारशिला 15 अगस्त, 1947 को बिहार के पहले और तत्कालीन राज्यपाल जयरामदास दौलतराम ने ही रखी थी। 1 मार्च 1979 को जयरामदास दौलतराम का निधन हो गया। उनकी स्मृति में भारत सरकार ने 1985 में डाक टिकट भी जारी किया था।

सहोदरन अय्यपन : जिन्होंने भाईचारे को बढ़ावा देने के लिए किया 'मिश्र भोजनम' का आयोजन

जन्म : 21 अगस्त 1889, मृत्यु : 6 मार्च 1968

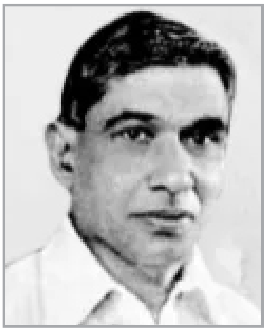

केरल के समाज सुधारक और चिंतक सहोदरन अय्यपन का जन्म 21 अगस्त 1889 को केरल के एर्नाकुलम स्थित चेरई में हुआ था। अय्यपन के बाल्यकाल में ही उनके पिता का निधन हो गया। ऐसे में उनके परिवार के अन्य सदस्य और बड़े भाई ने उनका पालन-पोषण किया। वह नारायण गुरु के विचार से प्रभावित थे इसलिए अय्यपन उनके शिष्य बन गए। निष्ठावान और राष्ट्रवादी अय्यपन ने 1928 में युक्तिवाद नामक एक पत्रिका निकाली ताकि स्वतंत्रता, समानता और भाईचारे की भावना का प्रचार-प्रसार किया जा सके। उनके संपादकीय, लेख और कविताएं अपने-अपने क्षेत्रों की असाधारण रचनाओं में शामिल है। उनके लेख और संदेश की विषयवस्तु आज भी प्रासंगिक है।

अय्यपन ने केरल में 'मिश्र भोजनम' का आयोजन किया। 'मिश्र भोजनम' को केरल के पुनर्जागरण आंदोलन में मील का पत्थर माना जाता है। इसमें सभी जातियों के लोगों ने एक साथ भोजन किया। समाज में भाईचारे को प्रोत्साहन देने के लिए अय्यपन ने 'सहोदरन' पत्रिका शुरू की। इसका प्रभाव ही था कि उनके नाम के साथ सहोदरन शब्द जुड़ गया। 'सहोदरन' का मतलब होता है भाई यानि वह सबके भाई थे। इतना ही नहीं वह एक कवि, निबंधकार, पत्रकार, सामाजिक चिंतक, वक्ता, सामुदायिक नेता के साथ-साथ प्रतिबद्ध राजनेता भी थे जिन्होंने जाति प्रथा व अन्य सामाजिक बुराईयों के खिलाफ अंतिम सांस तक लड़ाई लड़ी। उन्होंने कोचीन विधान परिषद का चुनाव लड़ा था और कई साल तक इस सीट का प्रतिनिधित्व करते रहे। केरल के एक समाज सुधारक और राजनेता अय्यपन ने केरल में कई विकासात्मक परियोजनाओं को भी आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 6 मार्च 1968 को अय्यपन का निधन हो गया लेकिन केरल के सांस्कृतिक एवं सामाजिक पुनर्जागरण के इतिहास में उनका योगदान सदैव याद किया जाता रहेगा। वह राजनीति में भी लंबे समय तक सक्रिय रहे। 1985 में चेराई में सहोदरन अय्यप्पन की याद में एक स्मारक बनाया गया। सहोदरन स्मारक में उस घर को भी शामिल किया गया है जहां उनका जन्म हुआ था। 14 फरवरी 1996 को भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति शंकर दयाल शर्मा ने कोच्चि में अय्यप्पन की एक मूर्ति का अनावरण किया था।

भारत में जलविद्युत उत्पादन का विकास

जल विद्युत ऊर्जा भारत के रिन्यूएबल एनर्जी की महत्वाकांक्षाओं को हासिल करने की कुंजी है। साथ ही जल विद्युत परियोजनाएं, पर्यावरण-अनुकूल विकास के लिए भारत की प्रतिबद्धता को भी दर्शाती है। इतना ही नहीं, जल विद्युत परियोजनाएं जल सुरक्षा, सिंचाई और पर्यटन के साथ-साथ रोजगार के अवसर भी पैदा करती है। पूरा विश्व भारत की इस बात की प्रशंसा कर रहा है कि हमारा देश किस तरह पर्यावरण को बचाते हुए विकास को गति दे रहा है। सोलर पावर से लेकर हाइड्रो पावर तक विंड एनर्जी से लेकर ग्रीन हाइड्रोजन तक देश रिन्यूएबल एनर्जी के हर संसाधन को पूरी तरह इस्तेमाल करने के लिए निरंतर कर रहा काम ...

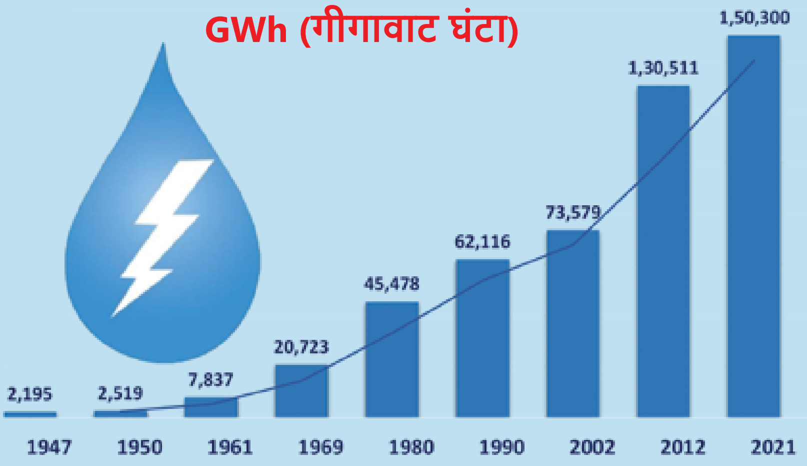

ऐतिहासिक चटगांव विद्रोह के नायक थे अंबिका चक्रवर्ती

जन्म : 1892, मृत्यु : 6 मार्च 1962

क्रांतिकारी स्वतंत्रता सेनानी अंबिका चक्रवर्ती का जन्म अविभाजित बंगाल के चटगांव जिला स्थित बरमा गांव में वर्ष 1892 में हुआ था। उनके पिता का नाम नंदकुमार चक्रवर्ती था। बाद में उनका परिवार चटगांव आकर रहने लगा जो अब बांग्लादेश का हिस्सा है। चटगांव शस्त्रागार केस के प्रसिद्ध क्रांतिकारी, वीर और साहसी देशभक्त अंबिका चक्रवर्ती पर उस समय के क्रांतिकारियों और स्वामी विवेकानंद का बहुत अधिक प्रभाव था जिससे प्रभावित होकर वह युवावस्था में ही स्वाधीनता की लड़ाई में कूद पड़े। वह विद्रोही स्वभाव के थे और क्रांतिकारी विचारों से खासे प्रभावित थे। यही कारण है कि क्रांतिकारी गतिविधियों में उनकी विशेष सक्रियता रही। अज्ञात कारणों से उन्हें पहली बार 1916 में गिरफ्तार किया गया और 1918 में वह रिहा हुए। बाद में वह इंडियन रिपब्लिकन आर्मी के सदस्य बन गए जिसका नेतृत्व मास्टर दा सूर्य सेन ने किया था। बाद में वह चटगांव के युगांतर पार्टी के भी सदस्य बने। माना जाता है कि उनकी क्रांतिकारी गतिविधियों के कारण ही उन्हें वर्ष 1924 में गिरफ्तार कर लिया गया और 1928 तक वह जेल में रहे। 1928 में जेल से छूटे तो उनके इरादे और अधिक फौलादी हो चुके थे। इसके बाद उन्होंने अपने कुछ साथियों के साथ चटगांव को अंग्रेजों से स्वतंत्र कराने की योजना बनाई। उन्होंने 18 अप्रैल 1930 को स्वतंत्रता सेनानी के एक समूह का नेतृत्व किया और संचार प्रणाली पर हमला किया। इस हमले ने चटगांव क्षेत्र में पूरी संचार प्रणाली को क्षतिग्रस्त कर दिया। 22 अप्रैल 1930 को जलालाबाद में अंग्रेजी अधिकारियों के साथ मुठभेड़ में वह गंभीर रूप से घायल हो गए। हालांकि, वह वहां से भागने में सफल रहे। कुछ महीने बाद ब्रिटिश पुलिस ने उन्हें हिरासत में ले लिया। उन पर मुकदमा चलाया गया और उन्हें मौत की सजा सुनाई गई। बाद में मौत की सजा को आजीवन कारावास में बदल दिया गया। उन्हें पोर्ट ब्लेयर के सेल्युलर जेल ले जाया गया। जेल से बाहर आने के बाद उनके विचारों में बदलाव आया और आजादी के बाद उन्होंने राजनीति में प्रवेश किया। वह 1952 में पश्चिम बंगाल विधान सभा के सदस्य भी चुने गए। भारत की स्वतंत्रता के बाद वह 1962 में अपनी मृत्यु तक लोगों की अथक सेवा करते रहे। जीवन भर देश की आजादी और क्रांति की अलख जगाने वाले अंबिका चक्रवर्ती का 6 मार्च 1962 को सड़क दुर्घटना में निधन हो गया।

डॉ. बालकृष्ण शिवराम मुंजे : जिन्होंने युवा शक्ति को मजबूत बनाने का रखा लक्ष्य

जन्म : 12 दिसंबर 1872, मृत्यु : 3 मार्च 1948

भारत के प्रसिद्ध स्वतंत्रता संग्राम सेनानी डॉ. बालकृष्ण शिवराम मुंजे का जन्म 12 दिसंबर 1872 को बिलासपुर (वर्तमान में छत्तीसगढ़) में हुआ था। डॉ. बालकृष्ण शिवराम मुंजे ने एक ऐसा जीवन जिया जिसमें उन्होंने युवा शक्ति को मजबूत बनाने का लक्ष्य रखा जो भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में अहम योगदान दे सकें। उन्होंने 1898 में ग्रांट मेडिकल कॉलेज बॉम्बे से अपनी मेडिकल डिग्री पूरी की और बॉम्बे नगर निगम में एक चिकित्सा अधिकारी के रूप में कार्य करना शुरू किया। हालांकि, बाद में उन्होंने अपना पूरा जीवन भारत के स्वतंत्रता संग्राम को समर्पित करने का फैसला किया और नौकरी छोड़ दी। इसके बाद उन्होंने अपना पूरा जीवन देश की आजादी के लिए न्यौछावर कर दिया। असल में मुंजे पेशे से डॉक्टर तो थे लेकिन उन्हें शस्त्रों का भी जबरदस्त ज्ञान था। देश के ऐसे कई क्षेत्र हैं जहां डॉ. मुंज ने अहम योगदान दिया। ऐसा ही एक क्षेत्र सेना का था जिसने उन्हें बहुत आकर्षित किया। नागपुर मे एक सैन्य स्कूल स्थापित करने का उनका सपना था जहां मां भारती के सपूतों को युद्ध के मैदान में महत्वपूर्ण भूमिका के लिए सैन्य प्रशिक्षण दिया जा सके। अपने सपने को पूरा करने के लिए उन्होंने 1934 में सेंट्रल हिंदू मिलिट्री एजुकेशन सोसाइटी की स्थापना की जिसका उद्देश्य मातृभूमि की रक्षा के लिए युवाओं को सैन्य प्रशिक्षण देना था। अपनी सोच को विस्तार देने और भारत के मजबूत सैन्य बल के लिए उन्होंने 12 जून 1937 को नासिक में भोंसला मिलिटरी स्कूल की स्थापना की। वह चाहते थे कि इस संस्थान से निकले छात्र विजय की महत्वाकांक्षा, वाकपटुता और कूटनीति की शक्ति से संपन्न हो।

18 अगस्त 1930 को उन्होंने एक भाषण दिया था जिसमें उन्होंने विश्व में चल रहे गतिविधियों का हवाला दिया। स्पेन और सुदूर पूर्व में चल रहे युद्ध का उल्लेख किया और दुनिया पर मंडरा रहे युद्ध के बादल पर अपने विचार रखे। अपने एक भाषण में उन्होंने कहा था कि हर लड़के को शारीरिक और सैन्य प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। उन्हें यह प्रशिक्षण सांप्रदायिक दृष्टिकोण से नहीं, बल्कि राष्ट्रीय दृष्टिकोण से दिया जाना चाहिए। एक और विषय था जिसमें उनकी गहरी रुचि थी। वह समाज में जाति को लेकर होने वाले असमानता को खत्म करना चाहते थे। इस दिशा में उन्होंने काफी काम किया और चुनावों में गैर-ब्राह्मणों को भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया। वह हिंदू महासभा के सदस्य भी थे। 1927 से 1928 तक 'अखिल भारत हिन्दू महासभा' के अध्यक्ष भी रहे। माना जाता है कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को बनवाने में भी उनका अहम योगदान था। वह संघ के संस्थापक केशव बलिराम हेडगेवार के राजनितिक गुरु थे। 3 मार्च 1948 को उनका निधन हो गया।

PMO India @PMOIndia
India government organization
We have spared no efforts to strengthen India's Nari Shakti.

रक्षा मंत्री कार्यालय/ RMO India
आप अगर एक कदम बढ़ाते हैं, तो सरकार का यह वादा है, कि सरकार उसके लिए दस कदम आगे बढ़ाएगी। आपने हमसे, विकास की राह पर दौड़ने के लिए जमीन की बात की थी। पर आपकी speed, और height को देखते हुए, हम आपको भरा-पूरा आसमान उपलब्ध कराने की ओर आगे बढ़ रहे हैं: रक्षा मंत्री

Amit Shah @AmitShah
किसी भी देश में G-20 के कार्यक्रम उनके 4-5 शहरों से बाहर नहीं होते हैं, लेकिन मोदी जी ने हर राज्य को मौका दिया है।

जब विभिन्न देशों से आये लोग भारत की अलग-अलग संस्कृति, विविधता और खानपान का संदेश लेकर यहाँ से जायेंगे तो देश की कीर्ति कई गुणा बढ़ेगी।

Nitin Gadkari @nitin_gadkari
Under the leadership of PM Shri @narendramodi Ji, we are ensuring to provide top-notch road infrastructure for citizens; ensuring fast, safe, and fuel-efficient mobility to every commuter.

Smriti Z Irani @smritiirani
G20 Empower Inception Meeting was held in Agra today. Historically, women have been accorded immense honour & respect in India. In line with our civilisational ethos & Women-led Development as envisioned by PM @narendramodi Ji, @g20org will further bolster @g20empower. #G20India

Shobha Karandlaje @Shobh...
Serving our daughters and mothers is a blessing.

The Modi government has not desisted from addressing the menstrual health of our daughters, making kitchens smoke-free for poor women, and providing sanitation facilities to females.
#NarendraModiSpeech
#ModiInParliament

एयरो इंडिया 2023 : प्रधानमंत्री मोदी ने कहा-दुनिया भारत के सामर्थ्य की साक्षी

नई ऊंचाई...नए भारत की सच्चाई

रणनीतिक साझेदारी पर आगे बढ़े भारत, अमेरिका, फ्रांस और ब्रिटेन

एयर इंडिया के लिए 470 विमानों की खरीद का करार बना अवसर

मोदी की बाइडन व मैक्रों से टेलीफोन व ऑनलाइन हुई बात ▪ सुनक भी द्विपक्षीय सहयोग बढ़ाने के पक्षधर

प्रधानमंत्री ने दौसा में पहले चरण का उद्घाटन किया, जयपुर तक सफर आसान होगा

दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे तरक्की की तस्वीर: मोदी

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा

दृढ़ संकल्प व निरंतरता देश के विकास के लिए जरूरी

यूपी वैश्विक निवेशक सम्मेलन में मोदी ने कहा

भारत की समृद्धि में ही दुनिया की समृद्धि

फिजियोथेरेपी की तरह निरंतरता विकास के लिए भी जरूरी : मोदी

आर.एन.आई
DELHIN/2020/78812
1-15 मार्च, 2023

न्यू इंडिया
समाचार
पाक्षिक

आरएनआई DELHIN/2020/78812, दिल्ली पोस्टल लाइसेंस नंबर-DL (S)-1/3550/2020-22 डब्ल्यूपीपी संख्या- U (S)-98/2020-22, posting at BPC, Meghdoot Bhawan, New Delhi - 110001 on 26-28 advance Fortnightly (प्रकाशन तिथि-17 फरवरी 2023, कुल पृष्ठ-48)

विश्व वन्यजीव दिवस - 3 मार्च

वन्यजीव संरक्षण के लिए प्रतिबद्ध भारत

आज 21वीं सदी का भारत, पूरी दुनिया को संदेश दे रहा है कि अर्थव्यवस्था और पारिस्थितिकी कोई विरोधाभाषी क्षेत्र नहीं है। पर्यावरण की रक्षा के साथ ही, देश की प्रगति भी हो सकती है। भारत ने दुनिया को यह करके दिखाया है। आज देश में वन-क्षेत्रों का विस्तार तेजी से हो रहा है तो संरक्षित क्षेत्रों के विशाल तंत्र के माध्यम से वन्यजीवों के संरक्षण की प्रतिबद्धता भी पूरी हो रही है। वन्यजीव संरक्षण संशोधन विधेयक-2022 संसद में पारित कर वन्यजीवों और वनस्पतियों की लुप्तप्राय प्रजातियों के अंतरराष्ट्रीय व्यापार पर कन्वेंशन-सीआईटीसी को लागू किया है। इसका उद्देश्य संरक्षित संकटग्रस्त प्रजातियों की सूची का विस्तार करना है। भारत में दुर्लभ 8 चीतों से कुनो में जो दौड़ शुरू हुई थी उसमें 12 चीतों को फिर दक्षिण अफ्रीका से लाकर जोड़ा गया है। यह संख्या धीरे-धीरे यूं ही बढ़ेगी। विश्व वन्यजीव दिवस एक सर्वोत्तम अवसर है जब हम उनके संरक्षण और सभी के अस्तित्व के लिए दोहराएं अपनी प्रतिबद्धता...

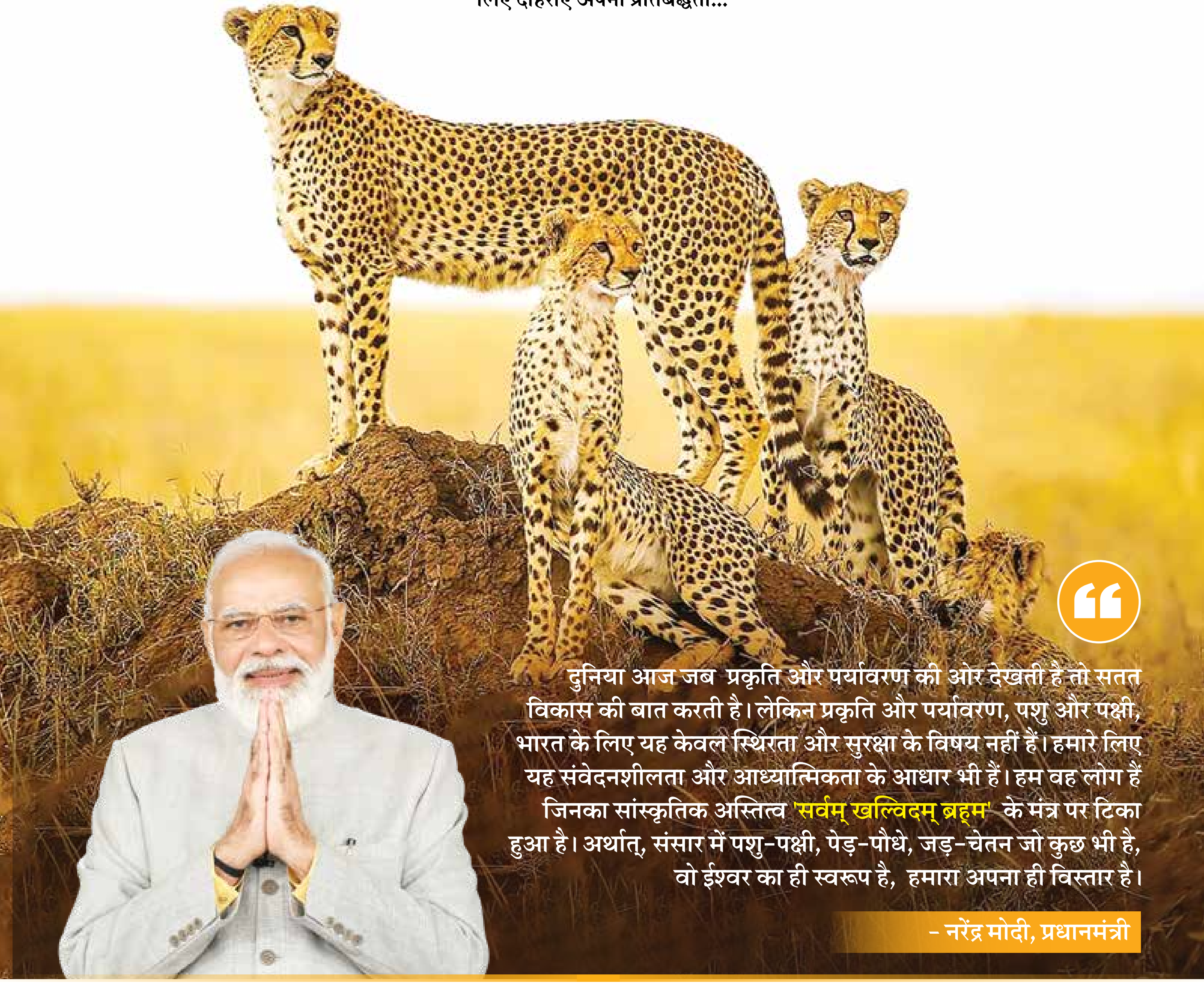

दुनिया आज जब प्रकृति और पर्यावरण की ओर देखती है तो सतत विकास की बात करती है। लेकिन प्रकृति और पर्यावरण, पशु और पक्षी, भारत के लिए यह केवल स्थिरता और सुरक्षा के विषय नहीं हैं। हमारे लिए यह संवेदनशीलता और आध्यात्मिकता के आधार भी हैं। हम वह लोग हैं जिनका सांस्कृतिक अस्तित्व 'सर्वम् खल्विदम् ब्रह्म' के मंत्र पर टिका हुआ है। अर्थात्, संसार में पशु-पक्षी, पेड़-पौधे, जड़-चेतन जो कुछ भी है, वो ईश्वर का ही स्वरूप है, हमारा अपना ही विस्तार है।

- नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

प्रधान संपादक:
सत्येन्द्र प्रकाश, प्रधान महानिदेशक,
पत्र सूचना कार्यालय, नई दिल्ली

प्रकाशक और मुद्रक:
मनीष देसाई, महानिदेशक
केंद्रीय संचार ब्यूरो

कमरा संख्या-278, केंद्रीय संचार ब्यूरो,
सूचना भवन, द्वितीय तल,
नई दिल्ली- 110003 से प्रकाशित

मुद्रण: इनफिनिटी एडवर्टाइजिंग सर्विसेस प्राइवेट लिमिटेड,
एफबीडी वन कॉर्पोरेट पार्क, 10वीं मंजिल, नई दिल्ली-
फरीदाबाद बॉर्डर, एनएच-1, फरीदाबाद-121003